# वाप्कोस दर्पण

संयुक्तांक 105 व 106
अप्रैल, 2022 से सितम्बर, 2022

# आर.के. अग्रवाल

अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक
वाप्कोस लिमिटेड


## सन्देश

भारत के इतिहास में 14 सितम्बर एक महत्वपूर्ण एवं स्मरणीय दिन है क्योंकि वर्ष 1949 को इसी दिन भारत के संविधान ने हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकार किया था, तभी से प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर "हिंदी दिवस" के रूप में मनाया जाता है। हिंदी बहुत ही सरल और उदार भाषा है। यह पूरे भारत में बोली व समझी जाती है। सम्पर्क सूत्र बनाए रखने के लिए हिंदी भाषा से अच्छी कोई भाषा नहीं है। राजभाषा नीति का कार्यान्वयन प्रेरणा, प्रोत्साहन और सद्भावना पर आधारित है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के निर्देशानुसार इस वर्ष वाप्कोस में 14 सितम्बर से 29 सितम्बर 2022 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया जा रहा है। हिंदी पखवाड़े के दौरान वाप्कोस में कई प्रतियोगिताओं व योजनाओं का आयोजन किया जा रहा है। मेरा सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से अनुरोध है कि वह इन प्रतियोगिताओं/योजनाओं में बढ़चढ़ कर भाग लेते हुए अपने कामकाज में राजभाषा हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें और संविधान के प्रति अपनी निष्ठा और समर्पण की भावना का पूर्ण परिचय दें और संकल्प करें कि वह केवल हिंदी पखवाड़े के दौरान ही नहीं, अपितु पूरे वर्ष हिंदी में काम करेंगे।

हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने तथा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के वर्ष 2022-23 के वार्षिक कार्यक्रम में दिये गए निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए हमें निरंतर प्रयास करने होंगे। राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए आज हर क्षेत्र में सुविधाएं एवं संसाधन उपलब्ध हैं जिनका प्रयोग करके हम राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना सहयोग दे सकते हैं।

"हिंदी दिवस" के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं।

दिनांक : 14 सितम्बर 2022

(आर.के.अग्रवाल)

# वाप्कोस दर्पण

संयुक्तांक 105 व 106
अप्रैल, 2022 से सितम्बर, 2022

**संरक्षक**
आर. के. अग्रवाल
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक

**सह-संरक्षक**
अनुपम मिश्रा
निदेशक ( वाणि. व मा.सं.वि. )
एवं अध्यक्ष, विराकास

**मुख्य संपादक**
प्रेम प्रकाश भारद्वाज
प्रमुख ( मा.सं. व रा.भा.का. )

**संपादक**
दलीप कुमार सेठी
उप मुख्य प्रबन्धक ( रा.भा.का. )

**सहयोग**
शारदा रानी
वरिष्ठ सहायक

( पत्रिका के अंतर्गत प्रकाशित लेखों में व्यस्थ किए गए विचार लेखकों के अपने है। संपादन मण्डल का इसके लिए सहमत होना अनिवार्य नही है। )

केवल आन्तरिक वितरण हेतु

| इस अंक में | पृष्ठ संख्या |
|---|---|
| संबोधन | 1 |
| सम्पादकीय | 2 |
| राजभाषा गतिविधियां | 3-9 |
| अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और चुनौतियां | 10-11 |
| पर्यावरण | 12-13 |
| हिन्दी दिवस/हिन्दी पखवाड़े की रिपोर्ट एवं झलकियां | 14-16 |
| माननीय संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति | 17-19 |
| ब्रांड बिल्डिंग | 20-24 |
| नालंदा का खंडहर | 25-30 |
| निंद्रा | 31-32 |
| हिन्दी का विकास राजभाषा के रूप में | 33-34 |
| एक नजर : शिवनेरी रोपवे परियोजना | 35-36 |
| आज़ादी का अमृत महोत्सव | 37-38 |
| वैज्ञनिकों के सरस प्रसंग विक्रम अंबालाल सारा भाई ( 1919-1971 ) | 39-40 |
| ईदगाह | 41-49 |
| शकुंतला देवी | 50-52 |
| भारत की आजादी के आंदोलन में हिंदी की भूमिका | 53-56 |
| काऊ नृप होई हमें का हानि | 57-65 |

# संबोधन

वाप्कोस की गृह पत्रिका "वाप्कोस दर्पण" के संयुक्तांक अप्रैल से सितम्बर 2022 के माध्यम से अपने विचार आप सभी पाठकों तक पहुंचाते हुए मुझे बेहद खुशी हो रही है। गृह पत्रिका किसी भी कार्यालय में हो रही गतिविधियों का प्रतिबिंब है जिसके माध्यम से अधिकारियों/कर्मचारियों को अपनी भावनाओं और विचारों को अभिव्यक्त करने का सुनहरा मौका मिलता है और राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार भी बढ़ता है। हिंदी भारत की राजभाषा के अलावा आम लोगों के बीच बातचीत करने की सबसे बड़ी सम्पर्क भाषा भी है। हिंदी के इसी महत्व को देखते हुए इसे संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया था।

कार्यालय के अपने कामकाज में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने में वाप्कोस के तकनीकी प्रभागों द्वारा भी काफी योगदान दिया जा रहा है। इस वर्ष वाप्कोस में 14 सितम्बर से 29 सितम्बर 2022 तक "हिंदी पखवाड़ा" मनाया गया। इस दौरान सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग में जागरूकता उत्पन्न करने के लिए कार्मिकों के लिए कई प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं के साथ-साथ प्रोत्साहन योजनाएं भी लागू की गई। इन प्रतियोगिताओं में कार्मिकों ने काफी उत्साह के साथ भाग लिया। इसी के साथ हिंदी पखवाड़े के अवसर पर मैं आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए आशा करता हूं कि यह पत्रिका सभी पाठकों की अपेक्षाओं पर भी खरी उतरेगी।

हिंदी दिवस के अवसर पर आप सबको हार्दिक शुभकामनाएं।

अनुपम मिश्रा

**(अनुपम मिश्रा)**
**निदेशक (वा.व मा.सं.वि.) एवं**
अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति

# सम्पादकीय

वाप्कोस की गृह पत्रिका "वाप्कोस दर्पण" का संयुक्तांक अप्रैल से सितम्बर 2022 आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यन्त खुशी का अनुभव हो रहा है। हिंदी हमारी राजभाषा है इसलिए हिंदी की उन्नति एवं इसके विकास के लिए कार्य करना हम सबका मौलिक दायित्व है। देश में भौगोलिक विभिन्नताओं से अधिक भाषायी विभिन्नता है इसलिए हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जो सबको एक सूत्र में पिरो सकती है क्योंकि भाषा वही महत्वपूर्ण होती है जो लोगों को तोड़ने के बजाय जोड़ने का संदेश दे।

राजभाषा हिंदी के सफल कार्यान्वयन के लिए वाप्कोस में भारत सरकार की राजभाषा नीति संबंधी प्रावधानों का समुचित अनुपालन किया जा रहा है। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के आदेशों को ध्यान में रखते हुए वाप्कोस में इस वर्ष 14 सितम्बर से 29 सितम्बर 2022 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। इस दौरान कार्यालय के कामकाज में हिंदी के प्रयोग में जागरूकता उत्पन्न करने के लिए हिंदी निबंध प्रतियोगिता, चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता, राजभाषा नीतिज्ञान प्रतियोगिता तथा श्रुतलेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें कार्मिकों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया।

आशा है कि यह पत्रिका पाठकों का ज्ञानवर्धन करेगी और नए पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करेगी। "वाप्कोस दर्पण" पत्रिका के आगामी अंकों को और अधिक ज्ञानवर्धक और रोचक बनाने में आपके सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।

"हिंदी दिवस" और "हिंदी पखवाड़े" के इस शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(प्रेम प्रकाश भारद्वाज)
प्रमुख (मा.सं. व रा.भा.का.)
एवं संपादक "वाप्कोस दर्पण"

# राजभाषा गतिविधियां

- जल शक्ति मंत्रालय, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग की हिन्दी सलाहकार समिति की दिनांक15.06.2022 को सम्मेलन कक्ष, चतुर्थ तल, पेयजल एवं स्वच्छता विभाग, पंडित दीन दयाल अन्तयोदय भवन, सीजीओ कॉम्पलेक्स, नई दिल्ली में माननीय जल शक्ति राज्य मंत्री श्री प्रहलाद पटेल जी की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में वाप्कोस से श्री आर.के.अग्रवाल, अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, वाप्कोस व एनपीसीसी, श्री अनुपम मिश्रा, निदेशक (वा. व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति तथा श्री प्रेम प्रकाश भारद्वाज, प्रमुख (कार्मिक व रा.भा.का.) ने भाग लिया।

- दिनांक 29.06.2022 को श्री अनुपम मिश्रा, निदेशक (वा.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता में वाप्कोस की विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई।

- राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग संबंधी स्थिति का जायजा लेने हेतु प्रबन्धक (रा.भा.का.) द्वारा दिनांक 09.06.2022 को वाप्कोस के सिविल डिजाइन प्रभाग का राजभाषाई निरीक्षण किया गया।

- राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग संबंधी स्थिति का जायजा लेने हेतु उप प्रबन्धक (रा.भा.का.) द्वारा दिनांक 21.06.2022 को वाप्कोस के अवस्थापना-2 प्रभाग का राजभाषाई निरीक्षण किया गया।

- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गुरुग्राम के तत्वावधान में वाप्कोस द्वारा दिनांक 27.04.2022 को "चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया जिसमें नराकास, गुरुग्राम के विभिन्न सदस्य कार्यालयों से वाप्कोस सहित 18 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता हेतु सभी प्रतिभागियों को एक चित्र दिया गया जिसे देखकर प्रतिभागियों ने अपने विचार लिखित रूप में व्यक्त किये। उक्त प्रतियोगिता में जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग, जल शक्ति मंत्रालय के श्री विजय सिंह मीना, निदेशक (रा.भा.) को भी आमंत्रित किया गया जिन्होंने उत्तर पुस्तिकाओं की जांच भी की। श्री प्रेम प्रकाश भारद्वाज, प्रमुख (कार्मिक व रा.भा.का.) एवं सदस्य सचिव नराकास, गुरुग्राम तथा श्री विजय सिंह मीना, निदेशक (रा.भा.), जल शक्ति मंत्रालय ने प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन भी किया।

- संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति द्वारा दिनांक 29.09.2022 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), गुरुग्राम के अध्यक्ष श्री आर.के.अग्रवाल, अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक, वाप्कोस लिमिटेड एवं 5 सदस्य कार्यालयों नामत: पावर ग्रिड कारपोरेशन, राइट्स लिमिटेड, एच.पी.सी.एल., इंडियन ऑयल कारपोरेशन लिमिटेड तथा वायुसेना स्टेशन के कार्यालय प्रमुखों के साथ विचार-विमर्श कार्यक्रम विज्ञान भवन में आयोजित किया गया। नराकास, गुरुग्राम के अध्यक्षीय कार्यालय वाप्कोस की ओर से श्री प्रेम प्रकाश भारद्वाज, प्रमुख (कार्मिक व रा.भा.का.) एवं सदस्य सचिव, नराकास, गुरुग्राम ने विचार-विमर्श कार्यक्रम में भाग लिया। विचार-विमर्श कार्यक्रम के दौरान समिति सदस्यों द्वारा उक्त पांचों कार्यालयों में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग संबंधी मदों पर विस्तार से चर्चा की गई।

- वाप्कोस में अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक के मार्गदर्शन में 14.09.2022 से 29.09.2022 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। कम्पनी के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से अनुरोध किया गया कि वे अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करें ताकि भविष्य में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए कम्पनी में अनुकूल वातावरण बनाया जा सके। हिन्दी पखवाड़े के दौरान निम्नलिखित प्रतियोगिताएं आयोजित की गई:-

  - हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता
  - चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता
  - राजभाषा नीति ज्ञान प्रतियोगिता
  - श्रुतलेख प्रतियोगिता (केवल समूह "घ" के कर्मचारियों के लिए)

  उक्त प्रतियोगिताओं में काफी कार्मिकों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। इन अवसरों पर जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग, जल शक्ति मंत्रालय से अधिकारियों को मार्गदर्शन/उत्तर पुस्तिकाओं की जांच के लिए आमंत्रित किया गया।

- हिन्दी पखवाड़े के दौरान उक्त प्रतियोगिताओं के अलावा निम्नलिखित दो योजनाएं भी लागू की गई:-

  - विशेष अल्पकालिक राजभाषा नकद पुरस्कार योजना (टिप्पण/लेखन)
  - हिन्दी आशुलिपि/हिन्दी टंकण में कार्य करने की विशेष अल्पकालिक नकद पुरस्कार योजना।

- हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर वाप्कोस के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने के लिए अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक की ओर से एक **"सन्देश"** भी जारी किया गया।

- दिनांक 27.09.2022 को विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई।

# हिन्दी पखवाड़े की झलकियां

# हिन्दी पखवाड़े की झलकियां

# हिन्दी पखवाड़े की झलकियां

# हिन्दी पखवाड़े की झलकियां

- हिंदी पखवाड़े के दौरान दिनांक 23.09.2022 को वाप्कोस में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस हिंदी कार्यशाला में जल शक्ति मंत्रालय के श्री विजय सिंह मीना, निदेशक (रा.भा.) को आमंत्रित किया गया जिन्होंने कार्यशाला में उपस्थित सभी कार्मिकों को राजभाषा नियमों व अधिनियमों की जानकारी दी तथा वाइस टाइपिंग का प्रशिक्षण भी दिया। इसके साथ-साथ उन्होंने कार्मिकों को गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के वर्ष 2022-23 के वार्षिक कार्यक्रम में दिये गए निर्धारित लक्ष्यों के बारे में बताया।

- जल शक्ति मंत्रालय, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग के श्री विजय सिंह मीना, निदेशक (रा.भा.) द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की स्थिति का जायजा लेने हेतु वाप्कोस के सूरत और वडोदरा कार्यालयों के निरीक्षण दिनांक 13.09.2022 तथा तिरुवनंतपुरम कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण दिनांक 24.09.2022 को किया गया।

- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गुरुग्राम के तत्वावधान में वाप्कोस द्वारा दिनांक 26.08.2022 को "राजभाषा नीतिज्ञान प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया जिसमें नराकास, गुरुग्राम के विभिन्न सदस्य कार्यालयों से 21 प्रतिभागियों ने भाग लिया। श्री प्रेम प्रकाश भारद्वाज, प्रमुख (कार्मिक व रा.भा.का.) एवं सदस्य सचिव नराकास, गुरुग्राम ने प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन भी किया।

- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.) गुरुग्राम की वर्ष 2022-23 की प्रथम छमाही बैठक श्री आर.के.अग्रवाल, अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक, वाप्कोस एवं अध्यक्ष, नराकास, गुरुग्राम की अध्यक्षता में दिनांक 25.07.2022 को दोपहर 3:00 बजे गुरुग्राम कार्यालय के समिति कक्ष में आयोजित की गई।

  बैठक में नराकास, गुरुग्राम के सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुख या उनके प्रतिनिधि तथा उनके साथ हिन्दी अधिकारी भी आनलाइन उपस्थित थे। बैठक में गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय-1 (दिल्ली) के उप निदेशक (कार्यान्वयन) श्री कुमार पाल शर्मा भी उपस्थित थे।

  सबसे पहले श्री प्रेम प्रकाश भारद्वाज, प्रमुख (कार्मिक व रा.भा.का.) तथा सदस्य सचिव, नराकास, गुरुग्राम द्वारा बैठक में उपस्थित नराकास अध्यक्ष, गुरुग्राम तथा सभी कार्यालय प्रमुखों/प्रतिनिधियों व राजभाषा अधिकारियों तथा उप निदेशक (कार्यान्वयन) का हार्दिक स्वागत किया गया। तत्पश्चात सदस्य सचिव के अनुरोध पर नराकास, गुरुग्राम के अध्यक्ष, श्री आर.के.अग्रवाल जी एवं उप निदेशक (कार्यान्वयन) का बैठक में पावर ग्रिड एवं खाद्य सुरक्षा संस्थान से उपस्थित उच्चाधिकारियों ने पुष्पगुच्छ देकर हार्दिक स्वागत किया। अध्यक्ष महोदय की अनुमति से सदस्य सचिव, नराकास, गुरुग्राम द्वारा बैठक की विभिन्न मदों पर विधिवत रूप से चर्चा की गई।

- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गुरुग्राम के तत्वावधान में राइट्स लिमिटेड द्वारा दिनांक 6.7.2022 को "राजभाषा हिंदी एवं सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में वाप्कोस से श्री यशपाल, वरि.निजी सचिव द्वारा भाग लिया गया और पांचवां स्थान प्राप्त किया।

लेख

# अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और चुनौतियां

**(हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त लेख)**

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से तात्पर्य देश की सीमाओं से आगे बढ़कर किया गया पूंजी, वस्तुओं एवं सेवाओं के लेन-देन से है। सरल भाषा में समझा जाए तो यह दो अथवा अधिक देशों के मध्य होने वाले आदान-प्रदान को दर्शाता है।

एतिहासिक रूप से देखा जाए तो अंतर्राष्ट्रीय व्यापार काफी प्रचलित रहा है। कई सदियों पूर्व ही रेशम मार्ग, एम्बर मार्ग इत्यादि काफी प्रचलित रहे हैं जिनसे दुनिया भर के व्यापारी अपना व्यापार करने के निमित्त एक देश से दूसरे देश यात्रा करते थे। दुनिया के कई देशों के भू-भाग की खोज के पीछे की कहानी भी अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से जुड़ी है। उदाहरणत: वेस्ट-इंडीज द्वीप समूह की खोज भारत के लिए समुद्री मार्ग खोजने के क्रम में हुई थी।

वर्ष 2021-22 में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का कुल आकलन 41,595 बिलियन डॉलर था। इसमें सबसे ज्यादा यूरोपीय संघ, संयुक्त राज्य  चीन, जर्मनी, जापान की हिस्सेदारी रही है। आमतौर पर यह पाया गया है कि यूरोप और संयुक्त राज्य जैसे विकसित देश कच्चे माल और सेवाओं का आयात अन्य अविकसित अथवा विकासशील देशों से करते हैं तथा तैयार माल और उन्नत किस्म के कल-पुर्जे एवं अन्य सामानों का निर्यात अविकसित एवं विकासशील देशों को करते हैं।

मूलत: अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को कई प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जिनकी वजह से अंतराष्ट्रीय व्यापार बाधित होता है।

वर्तमान समय में रूस और यूक्रेन, आर्मेनिया और अजरबैजान, इजराइल और फिलिस्तीन तथा अन्य देशों के बीच हो रहे युद्ध या तनाव का अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर बुरा असर पड़ा है। उदाहरण के तौर पर यूक्रेन गेहूं का एक बड़ा उत्पादक देश है जो दुनियाभर के कई देशों में रह रहे लोगों को गेहूं की आपूर्ति करता है। किन्तु वर्तमान में चल रहे रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध की वजह से कई दिनों तक गेहूं की आपूर्ति बाधित है।

यह भी देखा गया है कि विकसित देश अपने यहां तैयार होने वाली उच्च तकनीक वाली मशीनों को दूसरे विकासशील देशों में काफी अधिक मूल्य पर बेचना चाहते हैं। उदाहरण के लिए संयुक्त राज्य की कई कम्पनियां जो कि चिकित्सकीय उपकरण बनाती हैं, ने भारत में काफी अधिक कीमत पर अपने उत्पादों को बेचा है। किन्तु सरकार ने अब अधिकतम मूल्य को निर्धारित कर दिया है जिसका ये कम्पनियां विरोध कर रही हैं।

यह भी पाया गया है कि विश्व व्यापार संगठन की कई नीतियां एवं नियम वर्तमान समय एवं परिदृश्य में अप्रासंगिक है। इनमें वर्तमान की परिस्थिति वं तकनीक के आधार पर परिवर्तन करने की आवश्यकता है।

संयुक्त राज्य अमेरिका और अन्य विकसित देशों द्वारा समय-समय पर अपने विरोधी देशों के ऊपर विभिन्न प्रकार के प्रतिबंध लगा दिए जाते हैं। परिणामत: अन्य देशों को मजबूरन उन प्रतिबंधों का पालन करते हुए अपने व्यापार को सीमित करना पड़ता है। इसका एक उदाहरण कैटसा प्रतिबंध है जो कि संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा रूस से रक्षा आयात करने वाले देशों पर लगाया जाता है। इसका अन्य सटीक उदाहरण यूरोप के देशों द्वारा रूस से सस्ती प्राकृतिक गैस एवं तेल का आयात न कर पाना भी है क्योंकि अगर वे ऐसा करते हैं तो उनके ऊपर न सिर्फ रूस की मदद करने के आरोप लगेंगे बल्कि प्रतिबंध भी लगाए जा सकते हैं।

संयुक्त राज्य अमेरिका एवं अन्य पश्चिमी देशों द्वारा ईरान से कच्चे तेल के आयात पर प्रतिबंध लगाना भी एक चुनौती है जिससे की अंतर्राष्ट्रीय व्यापार प्रभावित होता है। ईरान द्वारा कच्चे तेल का कम मूल्य पर निर्यात करने को तैयार रहने के बाद भी विकासशील देश उससे तेल पहीं खरीद पा रहे। संयुक्त राज्य अमेरिका ने अपने दुश्मन देशों के साथ व्यापार करने पर न सिर्फ अन्य देशों को रोका है बल्कि अगर वे देश इस व्यापार के लिए उसकी मुद्रा का इस्तेमाल करते हैं, तो भी उन्हें प्रतिबंध का सामना करना पड़ेगा।

कोविड-19 के रूप में उभरी वैश्विक महामारी में उद्योग एवं अन्य सेवाएं प्रभावित हुई हैं। इस कारणवश भी अंतर्राष्ट्रीय व्यापार प्रभावित हुआ है।

कुछ देशों द्वारा अपने देश के उत्पादों और उद्योगों को मिलने वाले संरक्षण एवं दूसरे देश के उत्पादों पर लगाने वाले शुल्क के कारण भी अंतर्राष्ट्रीय व्यापार प्रभावित होता है।

इसके अलावा बड़े एवं सामर्थ्यशाली देशों के द्वारा अपनाई गई नीतियां भी अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को प्रभावित करती है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए यह आवश्यक है कि विदेशी एवं स्वदेशी उद्योगों को समान अवसर मिले, समान कर प्रणाली का सामना करना पडे।

इसके अलावा मुक्त व्यापार समझौते भी देशों के मध्य होने वाले परस्पर व्यापार को बढ़ावा देते हैं। साथ ही यह भी आवश्यक है कि आधारभूत संरचना में भी बढोतरी इस प्रकार से की जाए जिससे कि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा मिले। इसमें यातायात, सड़क, रेल-मार्ग, पत्तन, वायु परिवहन आदि की व्यवस्थाओं को भी सुदृढ़ करने की आवश्यकता है।

इसके अलावा विभिन्न प्रकार के विवादों का निपटारा करने के लिए भी अपीलीय प्राधिकरण होना आवश्यक है। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार वर्तमान में एक आवश्यकता है और इसे हर हाल में बढ़ाने एवं संरक्षण देने की आवश्यकता है।

**श्वेताभ त्रिपाठी**
**वरि. अभियंता ( उत्पादन )**

# पर्यावरण

(हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त लेख)

आज का हमारा विषय पर्यावरण से संबंधित है जोकि हमें चित्र की अभिव्यक्ति द्वारा लिखना है।

पर्यावरण हमारे जीवन के लिए बहुत ही जरूरी एवं आवश्यक है। अत: हमें कोशिक करनी चाहिए कि हमारे आस-पास का एवं हमारे देश का पर्यावरण स्वच्छ एवं निर्मल रहे। उसके लिए हमें प्रयास करना चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में कम से कम एक पेड़ अवश्य लगाना चाहिए और अन्य जन मानस को भी पेड़ लगाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। उसके अलावा हमें अपने आस-पास के नदी नाले, बांध एवं जलाशय को भी स्वच्छ रखना चाहिए उनमें पूजा सामग्री, कूड़ा-कचरा इत्यादि नहीं डालना चाहिए। हांलाकि राज्य सरकारें इसके लिए प्रयासरत हैं कि हमारे जल स्रोतों को हम स्वच्छ एवं निर्मल रखें और भारत सरकार द्वारा भी नमामि गंगे मिशन चलाया हुआ है जिसमें प्रति वर्ष भारत सरकार द्वारा लाखों-करोड़ों रूपये मां गंगा की सफाई हेतु खर्च किये जाते है। अत: हमारा भी कर्तव्य बनता है कि हम एक भारतीय होने के नाते सम्पूर्ण सहयोग दें। अब हम बात करते हैं कि हमारा पर्यावरण प्रदूषित होने का कारण क्या है। इसका कारण है कि हमने उद्योग-धंधों के लिए जो कारखानों लगाए हैं उन से निकलते हुए धुंए, कैमिकल इत्यादि, जो कि हमारे आस-पास के पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं उसके लिए एक योजनाबद्ध तरीके से उनको रोकने का  प्रयास करना चाहिए उन से बेकार निकलते हुए कूड़े-कचरे का सही से निस्तारण करना चाहिए।

आजकल हम देखते हैं कि अगर कोई पशु मर जाता है तो उसको आस-पास के नदी, नहर या तालाब आदि में फेंक दिया जाता है, अगर कोई कूड़ा करकट की गाडी़ आती है तो वो भी कचरा नदी-नहर में प्रवाहित कर दिया जाता है और हमारे अनेकों त्यौहार हैं जेसे कि गणेश पूजा, दुर्गा पूजा, विश्कर्मा पूजा इत्यादि पर मूर्ति विसर्जन भी नदीयों नालों में कर दिया जाता है। ऐसे बहुत से अनेकानेक कारण हैं हमारे जल संसाधनों के प्रदूषित होने को। अगर हमें स्वयं अपने और अपनी आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ एवं निर्मल जल उपलब्ध कराना है तो हमें हमारे संसाधनों को सहेजकर रखना होगा। इसके लिए हमें प्रण लेना होगा कि हम अपने घर के कूड़े-कचरे का निस्तारण सही तरीके से करें न कि जल में प्रवाहित करके। अत: हमें पर्यावरण को बचाने के लिए पेड़-पौधों और अपने जल-संसाधनों को बचाना होगा। उसके लिए हमें अपने आस-पास के जल स्रोतों को जिसमें प्लास्टिक का कूड़ा कचरा पड़ा हो या अन्य कोई कचरा हो तो हमें अपने आसपास के लोगों को संगठित करके प्रत्येक माह में कम से कम दो दिन सफाई अभियान चलाना होगा। यदि प्रत्येक गली-मोहल्ले में, नगरों में हर नागरिक सफाई व्यवस्था हेतु अपना सहयोग देगा तो निश्चित ही एक दिन हम अपना पर्यावरण स्वच्छ एवं निर्मल कर पायेंगे। दूसरा जैसा हम देखते हैं कि आजकल हर फसल में यूरिया, कैमिकल इत्यादि  का भरपूर और अनावश्यक प्रयोग होता है जो कि हमारे और हमारे बच्चों के स्वास्थ्य के लिए अत्यंत ही नुकसान दे है। हमें देसी तरीकों से तैयार की हुई फसलों का उपयोग करना चाहिए। आज इंसान धन के मोह में ये भूल गया है कि वह फलों, सब्जियों, अनाजों आदि की खतरनाक कैमिकल से तैयार फसलों से धन तो कमा सकते हैं लेकिन अपने और अपने पर्यावरण का नुकसान भी कर रहे हैं। अत: हम सभी को सचेत रहना होगा और जनमानस को भी सचेत करना होगा कि हम हर एक ऐसी वस्तु का बहिस्कार करें जिस के निर्माण से हमारा पर्यावरण प्रदूषित हो। पर्यावरण के प्रदूषित होने के अनेकों कारण है जैसे कि निर्माण कार्य, अपने घर के कूड़े-कचरे का सही से निस्तारण न करना, बरसात के समय में जल का संचयन न करना इत्यादि।

मुकेश गौड़
प्रारूपकार (बांध व जलाशय)

हिन्दी का मान करें हम हिन्दी का सम्मान करें
हर दिन होगा "हिन्दी दिवस" गर राजभाषा में हम काम करें

---

हिन्दी प्रजातंत्र की भाषा, जो पूरी करती हमारी आशा
इसे सीखना बहुत सरल है, इसलिए यह है राजभाषा।
फिर भी न जाने क्यों अब तक, अँग्रेजी का खेल-तमाशा
हिन्दी प्रजातंत्र की भाषा, हिन्दी प्रजातंत्र की भाषा।

# वाप्कोस के क्षेत्रीय/फील्ड कार्यालयों में दिनांक 14/09/2022 से 29/09/2022 के दौरान आयोजित हिन्दी दिवस/हिन्दी पखवाड़े की रिपोर्ट एवं झलकियां

## हैदराबाद कार्यालय

वाप्कोस के हैदराबाद कार्यालय में दिनांक 14-09-2022 से 29-09-2022 तक **'हिन्दी पखवाड़े'** का आयोजन किया गया। दिनांक 14 सितम्बर, 2022 को **'हिन्दी दिवस'** का आयोजन किया गया। इस दौरान 'आजादी का अमृत महोत्सव' विषय पर हिन्दी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता के विजेताओं को प्रथम, द्वितीय, तृतीय और सांत्वना पुरस्कार प्रदान किए गए।

## पुणे कार्यालय

'हिन्दी दिवस' के अवसर पर दिनांक 14 सितम्बर, 2022 को वाप्कोस कार्यालय, पुणे में हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य कार्यालय के कामकाज में राजभाषा के रूप में हिन्दी के प्रति जागरूकता पैदा करना और उसके उत्तरोत्तर प्रयोग में गति लाना है। कार्यक्रम में सभी अधिकारियों और कर्मचारियों ने हिन्दी को बढावा देने के लिए अपने विचार प्रस्तुत किए एवं लगभग सभी ने हिन्दी में गद्य और पद्य पाठ पढा और आगे भी ऐसे समारोह करवाने के लिए प्रस्ताव रखा। अंत में परियोजना प्रबंधक ने हिन्दी भाषा का महत्व समझाया एवं कविताएं प्रस्तुत की। सभी कर्मचारियों का धन्वाद करते हुए कार्यक्रम का समापन किया।

## बैंगलूरू कार्यालय

वाप्कोस के बैंगलूरू कार्यालय में दिनांक 14 से 29 सितम्बर, 2022 तक 'हिन्दी पखवाड़े' का आयोजन किया गया। इस दौरान दिनांक 14.09.2022 को 'हिन्दी दिवस' मनाया गया तथा हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें परियोजना प्रबंधक द्वारा राष्ट्रभाषा के महत्व और इतिहास के बारे में जानकारी दी और कार्यालय के कामकाज में ज्यादा से ज्यादा हिन्दी के इस्तेमाल करने का अनुरोध किया। कार्मिकों ने कार्यालय के विविध विषयों के संबंध में हिन्दी में वार्तालाप व टिप्पणी आदि का अभ्यास किया और प्रतिदिन कार्यालय का ज्यादा से ज्यादा कार्य हिन्दी में करने का संकल्प लिया।

## चण्डीगढ़ कार्यालय

वाप्कोस के चण्डीगढ़ कार्यालय में दिनांक 14 से 29 सितम्बर, 2022 तक 'हिन्दी पखवाड़े' का आयोजन किया गया। इस दौरान 14.09.2022 को 'हिन्दी दिवस' का आयोजन किया गया जिसमें कार्मिकों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान परियोजना प्रबंधक, चण्डीगढ़ ने ‘हिन्दी की महत्ता’ विषय पर एक विशेष व्याख्यान दिया जिसमें हिन्दी भाषा को बढ़ावा देने के लिए कार्यालय का कामकाज अधिक से अधिक हिन्दी भाषा में करने पर बल दिया गया।

## पटना कार्यालय

वाप्कोस के पटना कार्यालय में दिनांक 14 से 29 सितम्बर, 2022 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। पखवाड़े के दौरान दिनांक 28.09.2022 को परियोजना प्रबंधक की अध्यक्षता में बैठक का आयोजन किया गया जिसमें कार्यालय के सभी कार्मिकों ने भाग लिया। इस दौरान परियोजना प्रबंधक ने कार्यालय में हिन्दी में किए जा रहे काम काज पर संतोष व्यक्त करते हुए हिन्दी के प्रति जागरूकता बढ़ाने एवं इसके उत्तरोत्तर प्रयोग में गति लाने हेतु सभी कार्मिकों को प्रोत्साहित किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि पत्राचार में अधिक से अधिक हिन्दी का प्रयोग किया जाना चाहिए।

बैठक में उपस्थित श्री मदन गोपाल कौलेशनम, वरि. सलाहकार, वाप्कोस द्वारा विशेष रूप से उल्लेख किया गया कि अभियांत्रिकी में बहुत से ऐसे तकनीकी शब्द हैं जो व्यवहारिक रूप से प्रयोग में नहीं हैं, उन शब्दों को भी हिन्दी में लिखा जाना राजभाषा के विकास में उपयोगी साबित होगा। उन्होंने यह भी कहा कि कार्यालय में कार्मिकों द्वारा प्रत्येक का एक दूसरे को हिन्दी में अभिवादन किया जाना प्रशंसनीय होगा। बैठक में उपस्थित सभी कार्मिकों द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार संबंधित अपने-अपने अनुभवों का वर्णन किया गया। साथ ही सभी कार्मिकों ने अध्यक्ष महोदय को विश्वास दिलाया कि भविष्य में वे सभी कार्यालय संबंधित कार्यों में अधिक से अधिक हिन्दी का प्रयोग करेंगे।

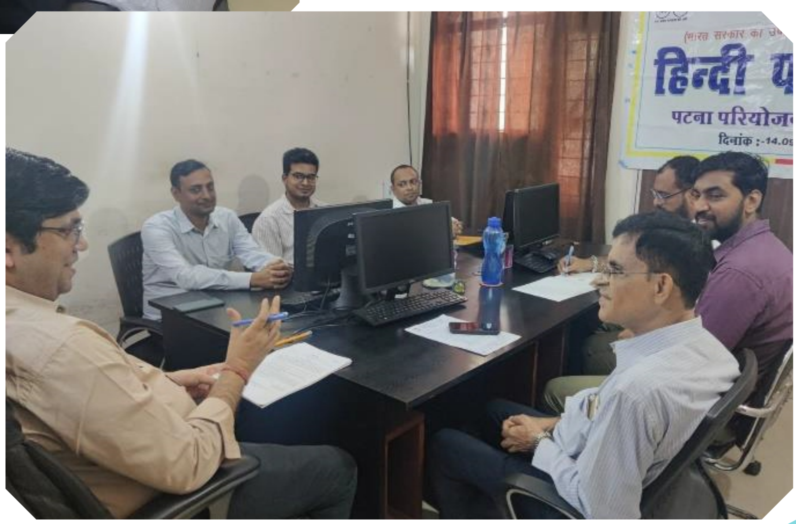

# माननीय संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति द्वारा अध्यक्ष नराकास (कार्यालय), गुरूग्राम व 5 सदस्य कार्यालयों के साथ विचार-विमर्श

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गुरूग्राम के अध्यक्षीय कार्यालय वाप्कोस लिमिटेड के अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक एवं अध्यक्ष, नराकास तथा 05 निम्नलिखित सदस्य कार्यालयों के साथ उनके कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग में हुई प्रगति की समीक्षा के संबंध में दिनांक 29 सितम्बर, 2022 को विज्ञान भवन, दिल्ली में विचार-विमर्श कार्यक्रम आयोजित किया गया:

1. वाप्कोस लिमिटेड
2. पावर ग्रिड कारपोरेशन, गुरूग्राम
3. राइट्स लिमिटेड, गुरूग्राम
4. इंडियन आयल कारपोरेशन लिमिटेड, गुरूग्राम
5. एच.पी.सी.एल., गुरूग्राम
6. वायुसेना स्टेशन, गुरूग्राम

सर्वप्रथम श्री आर. के. अग्रवाल, अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, वाप्कोस एवं अध्यक्ष, नराकास (कार्यालय) गुरूग्राम द्वारा माननीय संसदीय राजभाषा समिति के सदस्यों का हार्दिक स्वागत किया गया। स्वागत के पश्चात अध्यक्ष महोदय ने अपने संक्षिप्त अभिभाषण द्वारा वाप्कोस लिमिटेड के संबंध में जानकारी दी तथा सभी सदस्य कार्यालयों के प्रमुखों द्वारा अपना अपना संक्षिप्त परिचय दिया गया। इसके उपरांत माननीय समिति सदस्यों के विधिवत् परिचय के साथ ही विचार विमर्श कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ।

विचार विमर्श कार्यक्रम के दौरान माननीय समिति के उपाध्यक्ष महोदय तथा सदस्यों द्वारा सभी सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुखों के साथ निरीक्षण प्रश्नावली की सभी मदों पर विस्तार से चर्चा की गई।

चर्चा के दौरान समिति सदस्यों द्वारा सभी सदस्य कार्यालयों को अपने-अपने कार्यालयों में निम्नलिखित मदों पर आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करने के निर्देश दिए :

1. नराकास की वर्ष में आयोजित होने वाली दोनों बैठकों में कार्यालय प्रमुख अनिवार्य रूप से भाग लें।
2. विचार-विमर्श कार्यक्रम में सभी कार्यालयों में हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त अधिकारी/कर्मचारी अपना शत-प्रतिशत कार्य हिन्दी में करें।
3. सभी कार्यालयों द्वारा 'क' एवं 'ख' क्षेत्र से अंग्रेजी में प्राप्त कुछ पत्रों के उत्तर अंग्रेजी में ही दिए जा रहे हैं, जबकि राजभाषा नियम 1976 के नियम 3 के अनुसार 'क' क्षेत्र में स्थित कार्यालयो द्वारा 'क' व 'ख' क्षेत्रों से अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिन्दी में दिए जाएं।
4. सभी कार्यालय 'क' एवं 'ख' क्षेत्रों से हिन्दी पत्राचार का निर्धारित लक्ष्य प्राप्त करने का प्रयास करें ताकि भविष्य में लक्ष्यों की प्राप्ति सुनिश्चित की जा सके।
5. हिन्दी पदों/अनुवादकों के पदों को शीघ्र भरा जाए ('क' क्षेत्र में 18 से 125 कार्मिकों पर एक पद)।
6. कृपया भविष्य में सभी कार्यालयों द्वारा प्रश्नावली में सूचना सही व ध्यानपूर्वक दी जाए।

# ब्रांड बिल्डिंग

ब्रांड बिल्डिंग, घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में रणनीतियों और युक्तियों का उपयोग करते हुए जागरूकता बढ़ा रहा है और संगठन को एक ब्रांड के रूप में बढ़ावा दे रहा है। ब्रांड बिल्डिंग का उद्देश्य कंपनी की एक विशिष्ट छवि का निर्माण करना है और यह एक बहुत महत्वपूर्ण पहलू है क्योंकि यह कंपनी की छवि को दर्शाता है। इस प्रकार ब्रांडिंग व्यवहार, संचार और प्रतीकात्मकता के प्रबंधन के द्वारा सभी हितधारकों के बीच विश्वास बढ़ाते हुए अनुकूल छवियों का निर्माण करने और उसे बनाए रखने की एक व्यवस्थित ढंग की सुनियोजित और क्रियान्वित प्रक्रिया है और अत: यह कंपनी प्रतिष्ठा को भी बनाए रखती है।

वाप्कोस की महत्वपूर्ण परियोजनाओं के विषय में ब्रांड बिल्डिंग को एक उपकरण के रूप में, एक मॉड्यूलर कॉर्पोरेट प्रेजेंटेशन को सटीक और मानकीकृत तरीके से तैयार किया गया है जो ग्राहकों और अन्य हितधारकों को प्रदर्शित करने के लिए भारत/विदेश में सभी अधिकारियों के लिए सरलता से उपलब्ध है।

वाप्कोस कॉर्पोरेट प्रेजेंटेशन

इसके अलावा, प्रत्येक माह प्रोजेक्ट अप्रेजल प्रेजेंटेशन मीटिंग (पीएपीएम) वर्चुअल रूप से आयोजित की जा रही हैं, जिसके अंतर्गत परियोजना से संबंधित अधिकारियों द्वारा सभी इकाइयों और कार्यालयों के बीच सूचना के प्रसार की सुविधा हेतु परियोजना को संचालित करने वाली प्रेजेंटेशन दी जाती हैं।

अब तक, 5 प्रोजेक्ट अप्रेजल प्रेजेंटेशन मीटिंग (पीएपीएम) आयोजित की जा चुकी हैं, जिनमें वाप्कोस के अधिकारियों द्वारा उनकी परियोजनाओं के साराशं, यूएसपी, और इन परियोजनाओं को तैयार करने और उनके कार्यान्वयन के दौरान सामने आयी चुनौतीयों तथा उपलब्ध कराये गये अप्रत्याशित समाधानों को प्रस्तुत किया गया। कंपनी के अन्य अधिकारी भी इन प्रस्तरियों में शामिल हुये।

परियोजना मूल्यांकन प्रेजेंटेशन बैठक

**प्रशंसा के प्रतीक के रूप में, प्रेजेंटेशन देने वाले और अपने अनुभव और विशेषज्ञता को साझा करने वाले स्टार प्रेजेंटरो का विवरण इस प्रकार है:**

## स्टार प्रेजेंटर

| प्रेजेंटर | अधिकारी का नाम और पदनाम | परियोजना पर प्रेजेंटेशन |
|---|---|---|
| | श्री आदर्श कुमार एस<br>उप मुख्य अभियंता<br>अवस्थापना IV | फिजी द्वीप समूह में क्वीन एलिजाबेथ ड्राइव के उन्नयन के लिए संविदा सेवाओं की अभियांत्रिकी |
| | श्री ऐश्वर्य श्रीवास्तव<br>वरिष्ठ अभियन्ता<br>सिविल डिजाईन | हाई एलटीट्यूड ट्रांसमिशन लाइन: ६६ केवी डी/सी दाह- हनु-खाल्त्से ट्रांसमिशन लाइन, लेह, लद्दाख |
| | श्री आलोक कुमार विद्यार्थी<br>कंट्री प्रबंधक<br>(रवांडा)<br>अवस्थापना-II | म्पांगा, सेक्टर, किरेहे जिला, रवांडा में सिंचाई और जल विभाजक प्रबंधन का विकास |
| | श्री अमित ग्वांडे<br>परियोजना प्रबंधक<br>भूटान | पंचेश्वर बहुद्देश्यीय परियोजना (5040 मेगावाट) भारत और नेपाल और कुरी-गोंग्री हाइड्रो-इलेक्ट्रिक परियोजना (2,800 मेगावाट) भूटान |
| | श्री बिद्युत कुमार रॉय<br>परियोजना प्रबंधक<br>अवस्थापना IV | पीएमसी के लिए उत्तर प्रदेश में गाजीपुर और तरिघाट के बीच गंगा के ऊपर रेल सह रोड ब्रिज |

| | | |
|---|---|---|
| | श्री चंदर भान<br>अभियंता<br>पर्यावरण, पंचकुला | हरियाणा में अमृत परियोजनाओं के लिए परियोजना प्रबंधन परामर्शी |
| | श्री चन्द्र शेखर के.<br>कंट्री प्रबंधक<br>तंज़ानिया | तंज़ानिया में जल आपूर्ति – तबोरा, इगुंगा और न्ज़ेगा टाउन में लेक विक्टोरिया पाइपलाइन का विस्तार |
| | श्री दिव्यांशु कौशिक<br>अभियंता<br>बाँध व जलाशय अभियांत्रिकी | लोअर सेती हाइड्रो पावर परियोजना (126 मेगावाट) |
| | श्री गौरव तंवर<br>वरिष्ठ अभियंता<br>अवस्थापना | अटल बिहारी वाजपेयी सूचना एवं संचार प्रोद्यौगिकी उत्कृष्टता केंद्र और आउटसोर्सिंग, उलानबातर, मंगोलिया |
| | सुश्री कलावती रावत<br>परियोजना प्रबंधक<br>पीएमजीएसवाई | भारत सरकार के साथ साझेदारी में उत्तराखंड राज्य में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (पीएमजीएसवाई) के तहत सड़कों एवं पुलों का निर्माण |
| | डॉ. कमलेश्वर प्रताप<br>मुख्य अभियन्ता (भूविज्ञानी)<br>भूजल संसाधन विकास और प्रबंधन | जलभृत मानचित्रण के लिए संकल्पनात्मक योजना |

| | | |
|---|---|---|
| | श्री के.पी.एस त्यागी<br>कंट्री प्रबंधक (फिजी)<br>अवस्थापना – IV | फिजी के जल प्राधिकरण के लिए परियोजना प्रबंधन परामर्श |
| | श्री मनीष यादव<br>वरिष्ठ तकनीकी परामर्श<br>आईडब्ल्यूसीआईएमएस, डब्ल्यूआरडी | एकीकृत जल एवं फसल सूचना एवं प्रबंधन प्रणाली, राष्ट्रीय जल सूचना केंद्र (एनडब्ल्यूआईसी) जल संसाधन नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग, जल शक्ति मंत्रालय, नई दिल्ली |
| | श्री मनोज कुमार<br>प्रमुख<br>प्रसारण एवं वितरण | सभी परियोजनाओं के लिए मोज़ाम्बीक एनर्जी हेतु डिजाईन और सुपरविजन कार्य (प्रो-एनर्जिया): पैकेज 1 और 2, मोज़ाम्बीक और क्यूबा, उत्तरी अमेरिका में 75 मेगावाट सोलर फोटोवोल्टिक पार्क और नेपाल में मुख्य शहरी केन्द्रों के लिए पावर वितरण प्रणाली नियोजन व्यवहार्यता रिपोर्ट और परियोजना की तैयारी |
| | सुश्री मुक्ता जे. सेस<br>अपर मुख्य अभियंता<br>अवस्थापना-II | हिंजलीकट, ओडिशा में बहुद्देश्यीय भीतरी हॉल |
| | श्री एन. रमन<br>अपर मुख्य अभियंता<br>जल संसाधन विकास<br>चेन्नई | तमिलनाडु सिंचित कृषि आधुनिकीकरण (आईएएम) परियोजना |

| | | |
|---|---|---|
| | सुश्री नेहा<br>वरिष्ठ अभियंता<br>हाइड्रो पावर | राहू घाट हाइड्रोइलेक्ट्रिक परियोजना (40मेगावाट), नेपाल |
| | श्री राहुल गौतम<br>अपर मुख्य अभियंता<br>बाँध व जलाशय अभियांत्रिकी | एकीकृत जल एवं फसल सूचना एवं प्रबंधन प्रणाली, राष्ट्रीय जल सूचना केंद्र (एनडब्ल्यूआईसी) जल संसाधन नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग, जल शक्ति मंत्रालय, नई दिल्ली |
| | श्री राजेश कुमार<br>अपर मुख्य अभियंता<br>परियोजना | भारतीय खेल प्राधिकरण के विभिन्न केन्द्रों के लिए खेल अवस्थापना सुविधाओं का विकास |
| | सुश्री रश्मी आर<br>अपर मुख्य अभियंता<br>अवस्थापना विकास | केरल में, उत्कृष्टता केन्द्रों के रूप में अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुसार स्कूलों का आधुनिकीकरण और अवस्थापना सुविधाओं को बेहतर बनाना |
| | श्री संजय गुप्ता<br>मुख्य अभियंता<br>थर्मल पावर | जिम्बाब्वे में देका पम्पिंग स्टेशन और रिवर वाटर इन्टेक सिस्टम का उन्नयन |
| | श्री तुषार विरदी<br>परियोजना प्रबंधक<br>(इंडोनेशिया)<br>अवस्थापना-I | इंडोनेशिया में सड़क और पुल उन्नयन परियोजना |

# नालंदा का खंडहर

मैं अपने आप को बहुत ही सौभाग्यशाली समझता हूँ, कि मेरा जन्म राजगीर की पहाड़ियों में अवस्थित एक गाँव में हुआ। मेरा बचपन इन्हीं पहाड़ियों पर चढ़ते-उतरते हुए बीता है। राजगीर एक बहुत ही खूबसूरत, मनोरम, स्वास्थ्यवर्धक, प्राकृतिक विविधताओं से परिपूर्ण एवं साथ-ही-साथ ऐतिहासिक स्थल है। जगह-जगह पर ऐतिहासिक धरोहर बिखरे पड़े हैं। बचपन से मैं नालंदा के खंडहर को देखता आ रहा हूँ, वह राजगीर से करीब 12 किलोमीटर दूर अवस्थित है। आइए आपको इस भव्य खंडहर से वाकिफ करा दूँ।

## परिचय

खंडहर बता रहे है, इमारत बुलंद थी। ये वाक्य  यह अहसास दिलाता है कि यहाँ किसी ऐसी चीज या इंसान के बारे में बात की जा रही है जो अब अपना यश खो चुका है, लेकिन अब भी इसमें उसके उसी यश के निशान बाकी हैं। इसी कहावत को चरितार्थ करता है नालंदा का खंडहर।

नालंदा विश्वविद्यालय विश्व में शिक्षा और संस्कृति का  प्राचीनतम केन्द्र था। अब इस महानतम विश्वविद्यालय के सिर्फ़ खंडहर बचे हैं।  संस्कृत में नालंदा का अर्थ होता है "ज्ञान देने वाला" (नालम = कमल, जो ज्ञान का प्रतीक है; दा = देना)। बुद्ध अपने जीवनकाल में कई बार नालंदा आए और लंबे समय तक ठहरे। नालंदा प्राचीन भारत में उच्च शिक्षा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और विख्यात केन्द्र था। महायान बौद्ध धर्म के इस शिक्षा-केन्द्र में हीनयान बौद्ध-धर्म के साथ ही अन्य धर्मों के तथा अनेक देशों के छात्र पढ़ते थे। इस विश्वविद्यालय की स्थापना गुप्त शासक, कुमारगुप्त प्रथम 450-470 के द्वारा करवायी गयी थी। इस विश्वविद्यालय को हेमंत कुमार गुप्त के उत्तराधिकारियों का पूरा सहयोग मिला। गुप्तवंश के पतन के बाद भी आने वाले सभी शासक वंशों ने इसकी समृद्धि में अपना योगदान जारी रखा। इसे महान सम्राट हर्षवर्द्धन और पाल शासकों का भी संरक्षण मिला। स्थानीय शासकों तथा भारत के विभिन्न क्षेत्रों के साथ ही इसे अनेक विदेशी शासकों से भी अनुदान मिला।

वर्तमान बिहार राज्य में पटना से लगभग 90 किलोमीटर दक्षिण-पूर्व और राजगीर से 12 किलोमीटर उत्तर में एक गाँव के पास अलेक्जेंडर कनिंघम द्वारा खोजे गए इस महान बौद्ध विश्वविद्यालय के भग्नावशेष इसके प्राचीन वैभव का बहुत कुछ अंदाज़ करा देते हैं।

अनेक पुराभिलेखों और सातवीं शताब्दी में भारत के इतिहास को पढ़ने के लिए आये चीनी यात्री ह्वेनसांग तथा इत्सिंग के यात्रा विवरणों से इस विश्वविद्यालय के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है।

## स्वरूप

लगभग 30 एकड़ में फैला यह विश्वविद्यालय, विश्व के प्रथम पूर्णतः आवासीय विश्वविद्यालयों में से एक था, जहां 10,000 छात्रों को पढ़ाने के लिए 2,000 शिक्षक थे। प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग ने 7 वीं शताब्दी में यहाँ जीवन का महत्त्वपूर्ण एक वर्ष एक विद्यार्थी और एक शिक्षक के रूप में व्यतीत किया था। प्रसिद्ध 'बौद्ध सारिपुत्र' का जन्म यहीं पर हुआ था।

यह विश्व का प्रथम पूर्णतः आवासीय विश्वविद्यालय था। इस विश्वविद्यालय में भारत के विंभिन्न क्षेत्रों से ही नहीं बल्कि कोरिया, जापान, चीन, तिब्बत, इंडोनेशिया, फारस तथा तुर्की से भी विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने आते थे। नालंदा के विशिष्ट शिक्षाप्राप्त स्नातक बाहर जाकर बौद्ध धर्म का प्रचार करते थे। इस विश्वविद्यालय को नौवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी तक अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त थी।

नालंदा का परिसर अत्यंत सुनियोजित ढंग से और विस्तृत क्षेत्र में बना हुआ है जिसमें यह विश्वविद्यालय स्थापत्य कला का अद्भुत नमूना था। इसका पूरा परिसर एक विशाल दीवार से घिरा हुआ था जिसमें प्रवेश के लिए एक मुख्य द्वार था। उत्तर से दक्षिण की ओर मठों की कतार थी और उनके सामने अनेक भव्य स्तूप और मंदिर थे। मंदिरों में बुद्ध भगवान की सुन्दर मूर्तियाँ स्थापित थीं। केन्द्रीय विद्यालय में सात बड़े कक्ष थे और इसके अलावा तीन सौ अन्य कमरे थे। इनमें व्याख्यान हुआ करते थे।

अभी तक खुदाई में तेरह मठ मिले हैं। वैसे इससे भी अधिक मठों के होने ही की संभावना है। मठ एक से अधिक मंजिल के होते थे। कमरे में सोने के लिए पत्थर की चौकी होती थी। दीपक, पुस्तक इत्यादि रखने के लिए आले बने हुए थे। प्रत्येक मठ के आँगन में एक कुआँ बना था। आठ विशाल भवन, दस मंदिर, अनेक प्रार्थना कक्ष तथा अध्ययन कक्ष के अलावा इस परिसर में सुंदर बगीचे तथा झीलें भी थी।

## प्रबंधन

समस्त विश्वविद्यालय का प्रबंधन कुलपति या प्रमुख आचार्य करते थे जो भिक्षुओं द्वारा निर्वाचित होते थे। कुलपति दो परामर्शदात्री समितियों के परामर्श से सारा प्रबंधन करते थे। प्रथम समिति शिक्षा तथा पाठ्यक्रम संबंधी कार्य देखती थी और द्वितीय समिति सारे विश्वविद्यालय की आर्थिक व्यवस्था तथा प्रशासन की देख-भाल करती थी। विश्वविद्यालय को दान में मिले दो सौ गाँवों से प्राप्त उपज और आय की देख-रेख यही समिति करती थी। इसी से सहस्त्रों विद्यार्थियों के भोजन, कपड़े तथा आवास का प्रबंध होता था।

## आचार्य

इस विश्वविद्यालय में तीन श्रेणियों के आचार्य थे जो अपनी योग्यतानुसार प्रथम, द्वितीय और तृतीय श्रेणी में आते थे। नालंदा के प्रसिद्ध आचार्यों में शीलभद्र, धर्मपाल, चंद्रपाल, गुणमति और स्थिरमति प्रमुख थे। 7 वीं सदी में ह्वेनसांग के समय इस विश्व विद्यालय के प्रमुख शीलभद्र थे जो एक महान आचार्य, शिक्षक और विद्वान थे।

## प्रवेश के नियम

प्रवेश परीक्षा अत्यंत कठिन होती थी और उसके कारण प्रतिभाशाली विद्यार्थी ही प्रवेश पा सकते थे। उन्हें तीन कठिन परीक्षा स्तरों को उत्तीर्ण करना होता था। यह विश्व का प्रथम ऐसा दृष्टांत है। शुद्ध आचरण और संघ के नियमों का पालन करना अत्यंत आवश्यक था।

## अध्ययन-अध्यापन

इस विश्वविद्यालय में आचार्य छात्रों को मौखिक व्याख्यान द्वारा शिक्षा देते थे। इसके अतिरिक्त पुस्तकों की व्याख्या भी होती थी। शास्त्रार्थ होता रहता था। दिन के हर पहर में अध्ययन तथा शंका समाधान चलता रहता था।

यहाँ महायान के प्रवर्तक नागार्जुन, वसुबन्धु, असंग तथा धर्मकीर्ति की रचनाओं का सविस्तार अध्ययन होता था। वेद, वेदांत और सांख्य भी पढ़ाये जाते थे। व्याकरण, दर्शन, शल्यविद्या, ज्योतिष, योगशास्त्र तथा चिकित्साशास्त्र भी पाठ्यक्रम के अन्तर्गत थे।

नालंदा की खुदाई में मिली अनेक काँसे की मूर्तियों के आधार पर कुछ विद्वानों का मत है कि कदाचित् धातु की मूर्तियाँ बनाने के विज्ञान का भी अध्ययन होता था। यहाँ खगोलशास्त्र अध्ययन के लिए एक विशेष विभाग था।

## पुस्तकालय

नालंदा में सहस्रों विद्यार्थियों और आचार्यों के अध्ययन के लिए, नौ तल का एक विराट पुस्तकालय था जिसमें 3 लाख से अधिक पुस्तकों का अनुपम संग्रह था। इस पुस्तकालय में सभी विषयों से संबंधित पुस्तकें थी। यह 'रत्नरंजक' 'रत्नोदधि' 'रत्नसागर' नामक तीन विशाल भवनों में स्थित था। 'रत्नोदधि' पुस्तकालय में अनेक अप्राप्य हस्तलिखित पुस्तकें संग्रहीत थी। इनमें से अनेक पुस्तकों की प्रतिलिपियाँ चीनी यात्री अपने साथ ले गये थे।

## छात्रावास

यहां छात्रों के रहने के लिए 300 से ज्यादा कक्ष बने थे, जिनमें अकेले या एक से अधिक छात्रों के रहने की व्यवस्था थी। एक या दो भिक्षु छात्र एक कमरे में रहते थे। कमरे छात्रों को प्रत्येक वर्ष उनकी अग्रिमता के आधार पर दिये जाते थे। इसका प्रबंधन स्वयं छात्रों द्वारा छात्र संघ के माध्यम से किया जाता था।

यहां छात्रों का अपना संघ था। वे स्वयं इसकी व्यवस्था तथा चुनाव करते थे। यह संघ छात्र संबंधित विभिन्न मामलों जैसे छात्रावासों का प्रबंध आदि करता था।

## अवसान

13 वीं सदी तक इस विश्वविद्यालय का पूर्णतः अवसान हो गया। मुस्लिम इतिहासकार मिनहाज़ और तिब्बती इतिहासकार तारानाथ के वृत्तांतों से पता चलता है कि इस विश्वविद्यालय को तुर्कों के आक्रमणों से बड़ी क्षति पहुँची। इस पर पहला आघात हुण शासक मिहिरकुल द्वारा किया गया। 1199 में तुर्क आक्रमणकारी बख्तियार खिलजी ने इसे जला कर पूर्णतः नष्ट कर दिया।

## ऐतिहासिक उल्लेख

प्रसिद्ध चीनी विद्वान यात्री ह्वेन त्सांग और इत्सिंग ने कई वर्षों तक यहाँ संस्कृति व दर्शन की शिक्षा ग्रहण की। इन्होंने अपने यात्रा वृत्तांत व संस्मरणों में नालंदा के विषय में काफी कुछ लिखा है।

ह्वेनत्सांग ने लिखा है कि सहस्रों छात्र नालंदा में अध्ययन करते थे और इसी कारण नालंदा प्रख्यात हो गया था। दिन भर अध्ययन में बीत जाता था। विदेशी छात्र भी अपनी शंकाओं का समाधान करते थे। इत्सिंग ने लिखा है कि विश्वविद्यालय के विख्यात विद्वानों के नाम विश्वविद्यालय के मुख्य द्वार पर श्वेत अक्षरों में लिखे जाते थे।

## प्राचीन अवशेषों का परिसर

इस विश्वविद्यालय के अवशेष चौदह हेक्टेयर क्षेत्र में मिले हैं। खुदाई में मिली सभी इमारतों का निर्माण लाल पत्थर से किया गया था। यह परिसर दक्षिण से उत्तर की ओर बना हुआ है। मठ या विहार इस परिसर के पूर्व दिशा में व चैत्य (मंदिर) पश्चिम दिशा में बने थे। इस परिसर की सबसे मुख्य इमारत विहार-1 थी।

आज भी यहां दो मंजिला इमारत शेष है। यह इमारत परिसर के मुख्य आंगन के समीप बनी हुई है। संभवत: यहां ही शिक्षक अपने छात्रों को संबोधित किया करते थे। इस विहार में एक छोटा-सा प्रार्थनालय भी अभी सुरक्षित अवस्था में बचा हुआ है। इस प्रार्थनालय में भगवान बुद्ध की भग्न प्रतिमा बनी है।

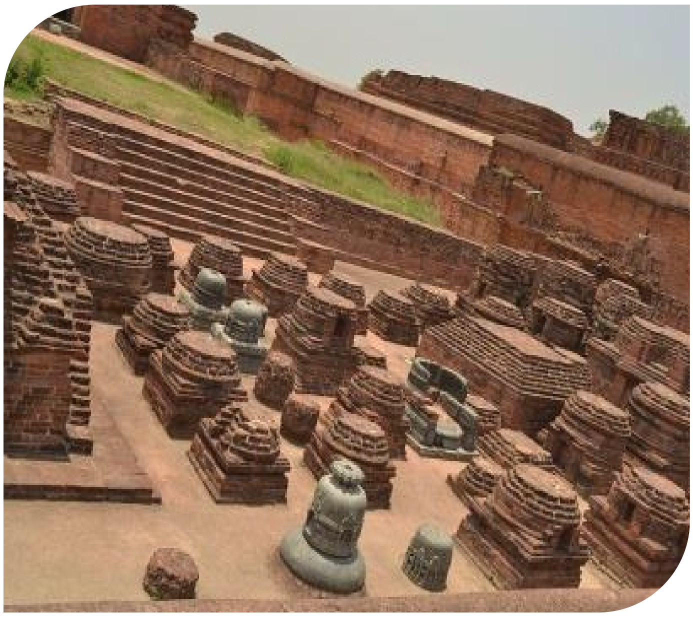

यहां स्थित मंदिर नं. 3 इस परिसर का सबसे बड़ा मंदिर है। इस मंदिर से समूचे क्षेत्र का विहंगम दृश्य देखा जा सकता है। यह मंदिर कई छोटे-बड़े स्तूपों से घिरा हुआ है। इन सभी स्तूपों में भगवान बुद्ध की विभिन्न मुद्राओं में मूर्तियां बनी हुई है।

## नालंदा पुरातात्विक

विश्वविद्यालय परिसर के विपरीत दिशा में एक छोटा सा पुरातात्विक संग्रहालय बना हुआ है। इस संग्रहालय में खुदाई से प्राप्त अवशेषों को रखा गया है। इसमें भगवान बुद्ध की विभिन्न प्रकार की मूर्तियों का अच्छा संग्रह है।

इनके साथ ही बुद्ध की टेराकोटा मूर्तियां और प्रथम शताब्दी के दो मर्तबान भी इस संग्रहालय में रखे हुए है। इसके अलावा इस संग्रहालय में तांबे की प्लेट, पत्थर पर खुदे अभिलेख, सिक्के, बर्त्तन तथा 12वीं सदी के चावल के जले हुए दाने रखे हुए हैं।

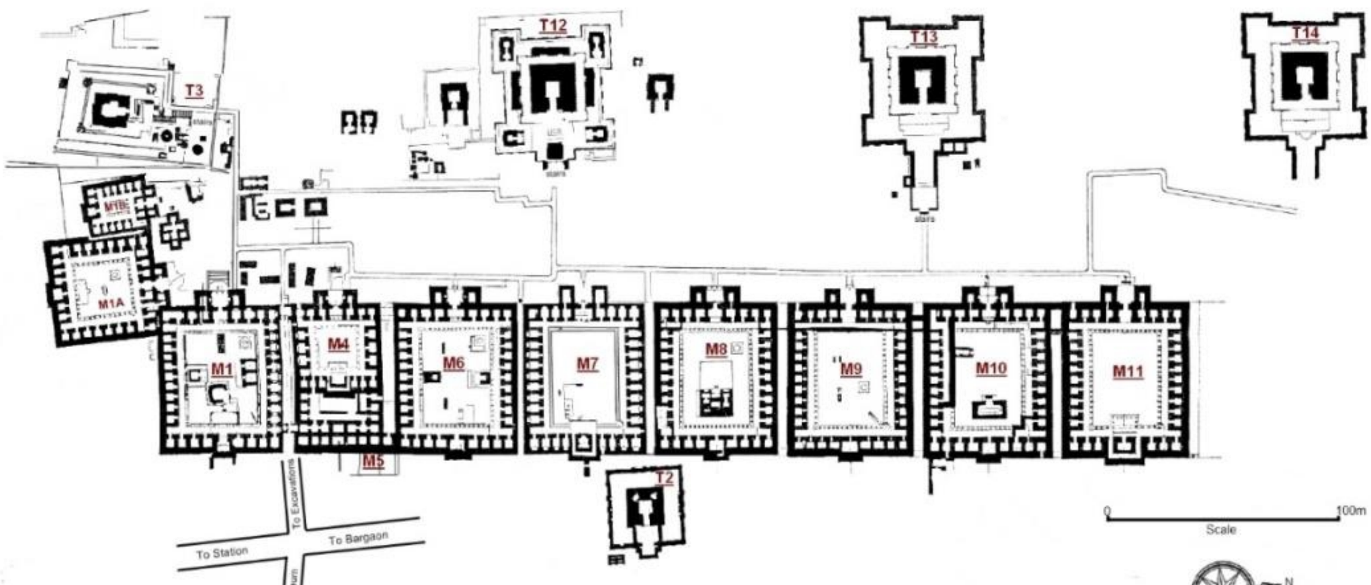


Nālandā, Excavated Remains

अब आप भी समझ गए होंगे कि मैं अपने आप को क्यों सौभाग्यशाली समझता हूँ। ऐसी ऐतिहासिक जगह से, जिसने शिक्षा, धर्म एवं इतिहास के क्षेत्र में भारतवर्ष को गौरवान्वित किया हो, इतने करीब से ताल्लुक रखने वाले शख्स को तो गर्व होना ही चाहिए।

रमेश चन्द्र
सहायक प्रणाली अधिकारी, कोलकाता

लेख

# निंद्रा

अच्छी नींद आना स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त आवश्यक है। जब आपको नींद अच्छी तरह से आएगी तो आप स्वस्थ भी रहेंगे। निंद्रा के दौरान शरीर अपनी टूट-फूट की मरम्मत करता है। शरीर में आए हुए विकारों को बाहर निकाल कर अपने आप को स्वस्थ रखता है जिससे दूसरे दिन कार्य करने की शक्ति पैदा होती है। देर रात तक कार्य करना और शरीर को आवश्यक आराम न देना या रात क्लबों में बिताना आदि अपने स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ करना है। बड़े-बड़े व्यक्ति, नेतागण, लेखक, बुद्धिजीवी जिनकी समाज व देश को अति आवश्यकता है, आज छोटी आयु में ही परलोक सिधार रहे हैं। हृदय गति बंद होने तथा अन्य रोगों से पीड़ित होकर अपने काम को अधूरा छोड़कर चले जाते हैं। इन सबका एक ही कारण है कि अपने स्वास्थ्य की ओर ध्यान न देना, शरीर को पूरा विश्राम न देना और रात को आवश्यक नींद न लेना।

चार-पाँच वर्ष के बच्चों को अधिक से अधिक समय सोना चाहिए। युवा व्यक्ति को आठ घंटे अवश्य सोना चाहिए। 50 वर्ष से ऊपर व्यक्ति के लिए 6 घंटे की नींद पर्याप्त हैं। वैसे यदि 4 घंटे गहरी नींद आ जाए तो उससे भी काम चल सकता है। गहरी नींद पर ही शरीर का स्वास्थ्य निर्भर करता है।

अगर हम निम्नलिखित बातों पर ध्यान देंगे तो हमें अवश्य ही गहरी नींद आएगी और हम स्वस्थ रहेंगे :-

1) जहां भी हम सोये वह स्थान स्वच्छ व हवादार होना चाहिए। खिड़की के ऊपर रोशनदान खुले रहने चाहिए ताकि ताजी हवा का आवागमन रहे।

2) बिछौना बिल्कुल साफ सुथरा और आरामदेह होना चाहिए। सर्दियों में ऊपर से ओढ़ने का कपड़ा भी पर्याप्त होना चाहिए ताकि आप शिथिल हो कर सो सकें। शरीर को ढीला रखकर सोना चाहिए ताकि सुबह उठने पर शरीर में नई शक्ति का संचार हो सके।

3) चारपाई कसी हुई होनी चाहिए। अच्छा है कि तख्तपोश पर सोएं जिससे आपका मेरुदंड सीधा रहे और रक्त संचार आपके शरीर में बेरोक-टोक हो सके।

4) बाईं ओर करवट लेकर सोने की आदत बनाएं क्योंकि हृदय और आमाशय बाईं तरफ होते हैं इससे इन्हें आराम मिलता है। करवट लेकर सोने से आप ढीलें होकर सोएंगे। सीधा या उल्टा सोने से व्यक्ति शिथिल नहीं होगा। यदि आप उल्टा होकर सोएगें तो आपके फेफड़ों के काम में रूकावट आ सकती है। वैसे दाईं करवट भी सो सकते हैं या करवट बदल कर भी सो सकते हैं।

5) कभी भी अपने मुख को कपड़े या लिहाफ़ से ढक कर न सोए। गर्दन तक मुख को खुला रखें ताकि शुद्ध वायु नासिका द्वारा ली जा सके और नासिका द्वारा गंदी वायु बाहर निकाली जा सके। अगर हम मुंह ढक कर सोएगें तो 6-8 घंटे तक कार्बन डाई आक्साइड गैस ही लेते रहेंगे और छोडते रहेंगे, रक्त को शुद्ध करने और विकार को बाहर निकालने के काम में रूकावट आएगी तथा कई प्रकार के रोगों का कारण बनेगा। श्वास नाक से ही लेना और नाक से ही छोड़ना चाहिए ताकि हवा गर्म होकर व छनकर जाए।

6) हमेशा रात को सोते समय पेट हल्का रहना चाहिए। पैर यदि ठंडे हों तो उन्हें गरम करें। पैरों को गरम करने के लिए पैरों को गरम पानी में रखे या जुराबें भी पहन सकते हैं।

7) जब भी आप निद्रा के लिए जाएं, तो मन व विचार बिल्कुल शांत होने चाहिए। अपने आप को चिन्ताओं से मुक्त रखें। गहरी नींद के लिए प्रसन्नचित्त रहना भी आवश्यक है। निद्रा से पूर्व यदि कुछ मनोरंजन हो जाए तो शरीर की नस नाडियां व मांस पेशियां शिथिल हो जाएंगी, इससे नींद बहुत अच्छी आएगी।

8) जिन्हें नींद न आती हो, ऐसे व्यक्ति सोने से पहले 10-15 मिनट का शवासन करें। शवासन पूरी तरह अपने श्वास व शरीर को एकाग्र करके करें। कुछ मिनट शवासन करने के बाद नींद बहुत अच्छी आएगी।

9) रात को सोने से पूर्व मुंह-हाथ धोकर आंखों पर छींटें लगाएं। अपने इष्टदेव का ध्यान करते हुए मंत्र का जाप करें या ॐ का स्मरण करते हुए सोंए, तो गहरी नींद आएगी।

10) सोने से पूर्व आंखों के चारों ओर मालिश करके आंखों की मांसपेशियों को शिथिल करें। कभी-कभार सिर की हल्की मालिश करवाएं, जिससे मस्तिष्क की नाडिया शिथिल हो जाएं। सप्ताह में एक-दो बार सिर की मालिश सोते समय करवाना बहुत लाभदायक है।

11) सोने से पहले ठंडा पानी पीने से नींद अच्छी आती है। पेट का भी ध्यान रखें, वह भी साफ रहना चाहिए । कब्ज नहीं होगी तो कभी भी गंदी गैस सिर पर चढ़ कर नींद हराम नहीं करेगी।

12) सिर के नीचे सिरहाना न बहुत ऊंचा हो और न ही नीचा हो, कंधे की ऊंचाई जितना रहना चाहिए।

कष्ट और विपत्ति मनुष्य के लिए शिक्षा देने वाले श्रेष्ठ गुण हैं।
जो साहस के साथ उनका सामना करते हैं, वे विजयी होते हैं।

लेख

# हिन्दी का विकास राजभाषा के रूप में

हिन्दी को राजभाषा के रूप में संविधान द्वारा मान्यता प्रदान की गई क्योंकि यही एक ऐसी भाषा थी जिसे अधिक से अधिक लोग बोलते व समझते थे। हर राष्ट्र की अपनी संस्कृति होती है जिसमें वहाँ के रहने वाले लोगों के खान-पान, रहन-सहन व बोलचाल की झलक मिलती है। भाषा के माध्यम से ही हम अपने विचारों को दूसरों को समझाने में समर्थ होते हैं और एक दूसरे के नजदीक आते हैं। राष्ट्रीय एकीकरण में भाषा का स्थान सर्वोपरि है। महात्मा गांधी ने कहा था "मेरे लिए भाषा का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है"। स्वराज तो हमें मिला पर अँग्रेज़ी के प्रति मोह न गया जो हमारी मानसिक गुलामी का परिचायक है। हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जो भारत के अधिकांश भागों में बोली व समझी जाती है इसलिए इसे संविधान में राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया गया और इसका विकास निरन्तर जारी है।

हिन्दी के उचित विकास के लिए यह आवश्यक है कि हम अपनी विचारधारा को बदलते हुए इसे इतना सम्मान दें जितना अन्य देशों के लोग अपनी भाषा को देते हैं। महादेवी वर्मा ने कहा "किसी दूसरी भाषा को जानना सम्मान की बात है, लेकिन दूसरी भाषा को अपनी भाषा के बराबर दर्जा देना शर्म की बात है"। अपनी भाषा का सम्मान हम तभी कर सकते हैं जब हम हर क्षेत्र में केवल उसी का प्रयोग करें। इससे हिन्दी का विकास भी होगा और हमें अपने विचारों को प्रस्तुत करने की उचित अभिव्यक्ति भी मिलेगी क्योंकि अपनी भाषा के माध्यम से विचारों को प्रकट करने की जो स्वतन्त्रता मिलेगी वो किसी दूसरी भाषा से नहीं मिल सकती।

राजभाषा शासन और जनता के बीच की एक महत्वपूर्ण कड़ी है जो सरकार की नीतियों को जनता तक पहुंचाने का एक सशक्त माध्यम है। हम अपने सरकारी कामकाज में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करके इसे बढ़ावा देने में एक छोटी-सी भूमिका निभा सकते हैं। हम अपना अधिकतर काम हिन्दी के माध्यम से ही कर सकते हैं। प्राय: लोग सोचते हैं कि कार्यालय में प्रयोग में लाई जाने वाली हिन्दी अलग प्रकार की होती है और कठिन होती है। परन्तु ऐसा नहीं है आप बोलचाल की साधारण हिन्दी का प्रयोग करके अपने कार्यालय का कार्य कर सकते है और इसके विकास में अपना सहयोग दे सकते हैं। आज राजभाषा इतनी सरल, सुबोध व सुगम हो गई है कि हम आसानी से हिन्दी पढ़-लिख सकते हैं। आम प्रचलन के शब्दों को हम ज्यों का त्यों देवनागरी में लिख सकते हैं जिससे हमारा काम बहुत आसान हो जाता है और इस प्रकार हम हिन्दी को आगे बढ़ाने में अपना सहयोग दे सकते हैं।

हिन्दी में कार्य करते समय अँग्रेज़ी शब्द का हिन्दी पर्याय ढूंढने में समय न गवांये बल्कि ऐसी स्थिति में अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्दों को ज्यों की त्यों अपना लें क्योंकि वे हमारी भाषा में इस प्रकार रच बस गए हैं कि हम हिन्दी में बात करते समय या कार्य करते समय उनका प्रयोग करते हैं तो हमें यह आभास भी नहीं होता कि ये दूसरी भाषा के शब्द हैं जैसे–टेलीफोन, स्कूल, कम्प्यूटर इत्यादि।

राजभाषा हिन्दी को बढ़ाने के लिए भारत सरकार द्वारा कई कदम उठाए गए हैं। सरकार की नीति हिन्दी को थोपने की नहीं बल्कि स्वेच्छा से अपनाने की रही है। सरकार के इन प्रयासों में राजभाषा विभाग की स्थापना, अधिनियम, नियम व संसदीय राजभाषा समिति आदि का गठन प्रमुख है। राजभाषा कार्यान्वयन के लिए नियम बनाए जाते हैं और विभिन्न स्तर पर विभिन्न प्रोत्साहन योजनाएं लागू की जाती हैं। आज के समय की यह आवश्यकता है कि वे सभी अधिकारी/कर्मचारी जिन्हें हिन्दी का ज्ञान है वे राजभाषा हिन्दी में अनिवार्य रूप से कार्य करते हुए इसके विकास के महायज्ञ में अपने सहयोग की आहुति अवश्य डालें।

14 सितम्बर, 1949 का दिन राजभाषा हिन्दी के लिए एक यादगार दिन है क्योंकि इसी दिन हमारी संविधान सभा ने हिन्दी को राजभाषा के पद पर सुशोभित किया था। राजभाषा हिन्दी आजाद देश की भाषा है जबकि अँग्रेज़ी गुलामी की जो हमें उन दिनों की याद दिलाती है। राजभाषा के विकास में जो व्यवहारिक समस्याएँ हैं उन्हें दूर करना मुश्किल नहीं है परन्तु यह तभी सम्भव होगा जब हम अपनी विचारधारा व दृष्टिकोण में बदलाव लाएंगे। इसके प्रयोग में हमें थोड़ा उदार होना होगा। राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की एकता व उन्नति के लिए आवश्यक है और यह तभी सम्भव है जब हम अधिक से अधिक कार्य अपनी भाषा में करें।

हिन्दी की सरलता, वैज्ञानिकता और सर्वव्यापकता को देखते हुए इसने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपना अधिकार जमा लिया है। हिन्दी में कार्य करना आसान है और यदि इच्छाशक्ति है तो इसके लिए किसी पर निर्भर रहने की जरूरत भी नहीं होती केवल हिन्दी में काम करने की इच्छा होनी चाहिए। आज का युग प्रौद्योगिकी का युग है हिन्दी में इन्टरनेट तक विकसित किया गया है। हिन्दी साफ्टवेयर व नवीनतम यांत्रिक सुविधाओं का अधिक से अधिक प्रयोग करें ताकि हिन्दी के प्रयोग में जो मूलभूत समस्याएं है उन्हें दूर करते हुए सफलतापूर्वक हिन्दी में कार्य किए जा सकें। इसके विकास के लिए उदारतापूर्वक दृष्टिकोण अपनाते हुए समर्पण भाव से कार्य किया जाए तभी हम अपने उद्देश्य में सफल हो सकेंगे।

**मातृभाषा के बिना स्वतन्त्रता बरकरार नहीं रह सकती है।**

लेख

# एक नजर: शिवनेरी रोपवे परियोजना

## पृष्ठभूमि:

महाराष्ट्र के पुणे जिले के जुन्नर तालुका में स्थित शिवनेरी नामक एक ऐतिहासिक किला है। यही वह स्थान है, जहां महान मराठा सम्राट श्री छत्रपती शिवाजी महाराज का जन्म हुआ। इसका निर्माण सत्रहवीं शताब्दी में हुआ था। 2021 में इसे यूनेस्को द्वारा 'विश्व विरासत स्थल' की सूची में शामिल किया गया। इस परियोजना का नियोक्ता लोक निर्माण विभाग, पुणे है।

## परियोजना के मुख्य उद्देश्य :

1) किले की ऊंचाई काफी अधिक होने के कारण कोई भी पर्यटक सुगमतापूर्वक रोपवे द्वारा परिवहन कर सकें।
2) स्थानीय लोगों के लिए विभिन्न प्रकार के रोजगार के अवसर पैदा हो सकें।
3) शिवनेरी किले की गणना महाराष्ट्र और भारतवर्ष के सर्वश्रेष्ठ तीर्थ स्थानों में हो।

## परियोजना के मुख्य लाभ :

1) रोपवे परियोजना के परिचालन से सड़क यातायात का बोझ काफी हद तक कम हो जाएगा।
2) किले की चढ़ाई काफी आसान हो जाएगी खासकर वृद्धजनों तथा दिव्यांगजनों के लिए।
3) शिवाजी महाराज की जन्मस्थली के रूप में जुन्नर एक रमणीय व आकर्षक पर्यटन स्थल बनकर उभरेगा।

## वाप्कोस की भूमिका :

- रोपवे प्रभाग के अभियंताओं द्वारा टोही सर्वेक्षण (Reconnaissance Survey) /साइट का दौरा किया गया।
- लोक निर्माण विभाग द्वारा उपलब्ध कराए गए दस्तावेजों/ रिपोर्ट का अध्ययन किया गया।
- परियोजना के प्रमुख घटकों को रेखांकित करते हुए ब्लॉक अनुमानित लागत (Block Cost Estimate) तैयार की गई।
- परियोजना के लिए व्यापक तकनीकी विनिर्देश (Broad Technical Specifications) तैयार किए गए।
- उक्त सभी बिंदुओं का समावेश कर अवधारणा (concept) रिपोर्ट का निष्पादन रोपवे प्रभाग द्वारा किया गया।

**(अनिमेष अग्रवाल)**
उप मुख्य अभियंता
रोपवे प्रभाग

लेख

# आज़ादी का अमृत महोत्सव

आज़ादी का अमृत महोत्सव भारत की स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होने का महोत्सव है। यह गाँधी जी के नमक सत्याग्रह के 91 वर्ष पूरे होने का दिन है जिसे भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा गुजरात के साबरमती आश्रम से 12 मार्च 2021को "आज़ादी का अमृत महोत्सव" के रूप में आरम्भ किया गया। यह महोत्सव स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगाँठ से 75 सप्ताह पहले शुरू हुआ और 15 अगस्त 2023 तक चलेगा।

## आज़ादी का अमृत महोत्सव का मुख्य उद्देश्य :-

प्रगतिशील भारत के 75 साल के गौरवशाली इतिहास को भारत के लोगों, भारतीय संस्कृति और उनसे जुड़ी हुई उपलब्धियों के रूप में मनाने के लिय आजादी का अमृत महोत्सव प्रारंभ किया गया।

मोदी जी ने "हर घर तिरंगा" अभियान का प्रारंभ किया जिसमें भारत के सभी नागरिक अपने कार्यस्थल और घरों पर तिरंगा फहराकर इस महोत्सव का हिस्सा बन गए। महोत्सव में सांस्कृतिक कार्यक्रम, संगीत, विभिन्न प्रदर्शन, प्रतिस्पर्धी प्रतियोगिताओं आदि के आयोजन के माध्यम से युवा पीढ़ी को आज़ादी पाने के लिए किए गए संघर्ष की जानकारी दी गयी।

"rastragaan.in" वेबसाइट पर राष्ट्रगान रिकॉर्ड करने के लिए नागरिकों को प्रोत्साहित किया जा रहा है, जिससे देशभक्ति की भावना पैदा होगी।

"विजन इंडिया@2047"- कोई भी व्यक्ति, संस्था या समूह अपनी भूमिका निभा सकता है।

## आज़ादी का अमृत महोत्सव के पांच थीम हैं:-

(1) स्वतंत्रता संग्राम : यह थीम गुमनाम शहीदों के बलिदान का स्मरण करने के लिए है।

(2) विचार@75 : स्वतंत्रता दिवस की 75वीं वर्षगांठ और 100वीं वर्षगांठ के बीच 25 वर्ष का समय "अमृत काल" के रूप में मनाया जाएगा। यह थीम नए विचारों, नए संकल्प, आत्मनिर्भरता और नए आदर्शों से प्रेरित है।

(3) संकल्प@75 : इस थीम का उद्देश्य सभी नागरिक भारत की बुनियाद मज़बूत बनाने का संकल्प लें।

(4) एक्शन@75 : ये थीम भारत को मज़बूत राष्ट्र बनाने के लिए बनाई गई है। इसका प्रयोग कोविड के पश्चात विश्व में उबरते भारत के लिए किया जा रहा है।

(5) उपलब्धियां@75 : भारत का 500 वर्ष पुराना इतिहास और स्वतंत्र भारत के 75 वर्षों के इतिहास में भारत की उपलब्धियों का अभिलेख समा गया है।

आज़ादी का अमृत महोत्सव किसी भी भेद-भाव, जाति-सम्प्रदाय, आदि से नहीं बल्कि सभी नागरिकों द्वारा मिल-जुलकर मनाया जाने वाला त्यौहार है। 200 वर्षों की गुलामी सहने के बाद स्वतंत्र भारत के 75 वर्षों की आज़ादी पर मनाया जाने वाला यह महोत्सव इस ऐतिहासिक क्षण को पुनर्जीवित करने के लिए और आज की युवा पीढ़ी में देश भक्ति समाने के लिए स्वंत्रता संग्राम के शहीद सपूतों के बलिदान और गुमनाम नायकों की गाथाओं को आज़ादी के अमृत महोत्सव द्वारा बताया जा रहा है।

## भारत की दृष्टि :

भारत को "विश्व गुरु" का स्थान प्राप्त कराने का प्रयास किया जाएगा। जन-जन के एकत्र विकास, विश्वास, साथ और प्रयास से यह सपना साकार होगा।

## सरदार वल्लभभाई पटेल

*"हिन्दी का पाट महासागर की तरह विस्तृत होना चाहिए, जिसमें मिलकर और भाषाएं अपना बहुमूल्य भाग ले सकें। राष्ट्रभाषा न तो किसी प्रांत की और न किसी जाति की है। वह सारे भारत की भाषा है और उसके लिए यह आवश्यक है कि सारे भारत के लोग उसको समझ सकें तथा अपनाने का गौरव हासिल कर सकें"।*

लेख

# वैज्ञानिकों के सरस प्रसंग
# विक्रम अंबालाल सारा भाई
# (1919-1971)

अहमदाबाद के एक उद्योगपति परिवार में 12 अगस्त, 1919 को विक्रम साराभाई का जन्म हुआ था। प्रारम्भिक पढ़ाई वहीं हुई तथा सन् 1939 में कैंब्रिज विश्वविद्यालय से भौतिकी की ट्राइपोज परीक्षा उत्तीर्ण की।

इसी समय द्वितीय विश्वयुद्ध शुरू हो गया था, अत: साराभाई भारत वापस आ गए और बैंगलूरू स्थित 'इंडियन इन्स्टीट्यूट ऑफ साइंस' में सर रामन् के साथ शोध-कार्य करने लगे।

द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति पर वे फिर कैंब्रिज गए और वहाँ से सन् 1947 में पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

कैंब्रिज से लौटकर अहमदाबाद में आपने 'भौतिक अनुसंधानशाला' की स्थापना की। इसके प्रथम निदेशक थे डॉ.के.आर.रामानाथन्। पहले तो डॉ. साराभाई कॉस्मिक किरण शोध के प्राध्यापक ही थे, किन्तु सन् 1965 में उन्होंने निदेशक के रूप में अनुसंधानशाला की सेवाएं आरम्भ की।

इस संस्था ने गुलमर्ग में स्थापित 'कॉस्मिक अनुसंधान केन्द्र' की जिम्मेदारी स्वयं ले ली। इतनी अधिक ऊँचाई पर स्थापित यह केन्द्र विश्व में सर्वप्रथम है। डॉ. साराभाई ने कोड़ाइ कैनाल (तमिलनाडु) तथा त्रिवेन्द्रम (केरल) में भी ऐसे केन्द्र स्थापित किए।

स्वतंत्र भारत में अंतरिक्ष अनुसंधान का सपना डॉ. साराभाई ने ही देखा। उनके द्वारा स्थापित संस्थाएं हैं – थुंबा, अहमदाबाद, श्रीहरिकोटा, आर्वी के भारतीय अंतरिक्ष संशोधन कार्य केन्द्र। थुंबा और श्रीहरिकोटा में रॉकेट प्रक्षेपण केन्द्र भी उन्होंने स्थापित किया।

अंतिम क्षण तक साराभाई विज्ञान-सेवा में रत थे। सन् 1971 के दिसम्बर में थुंबा केन्द्र में वह रॉकेट छोड़ने का मार्गदर्शन कर रहे थे। 29 दिसम्बर की रात सोए, तो फिर नहीं उठे।

## गलतियों से सीखें

**बात** सन् 1948 की है। अहमदाबाद के महात्मा गांधी विज्ञान संस्थान में दो विद्यार्थी प्रयोगशाला में कुछ प्रयोग कर रहे थे। प्रयोग करते समय अधिक विद्युत प्रवाहित हो जाने से यंत्र जल गया। दोनों विद्यार्थी डर गए। इसी बीच उधर ही उनके गुरु आते दिखाई दिए। उनमें से एक विद्यार्थी बोला – 'वे आ रहे हैं, उन्हें बता दो।'

मैंने यह नुकसान नहीं किया। अत: तुम स्वयं ही बता दो'। दूसरे ने तर्क किया।

तब तक गुरूजी करीब आ चुके थे। उन्होंने दोनों विद्यार्थियों का वार्तालाप सुन लिया था। पास आकर पूछा – 'क्या बात है?'

डरते-डरते एक विद्यार्थी ने जवाब दिया – 'विद्युत मोटर में एकाएक अधिक विद्युत प्रवाहित हो जाने के कारण वह जल गया है, सर'।

'बस इतना ही? उसकी चिंता नहीं। विद्यार्थी अध्ययन करते हैं, तब ऐसी घटनाएं हुआ ही करती हैं। गलतियां नहीं होंगी तब विद्यार्थी सीखेंगे कैसे? भविष्य में सावधानी रखो, यही बहुत है।' प्यार से गुरूजी ने विद्यार्थियों को समझाया।

उक्त गुरूजी कोई और नहीं, बल्कि थे – भारत में अंतरिक्ष-युग के प्रणेता डॉ. अंबालाल साराभाई। तब उन्होंने यह प्रयोगशाला नई-नई प्रारंभ की थी। काफी बड़ा नुकसान हो जाने पर भी वह विद्यार्थियों पर बिगड़े नहीं, बल्कि उन्हें प्यार से समझाया ही।

## हर एक के लिए समय

डॉ. साराभाई बहुत ही नम्र और सरल थे। उनके जीवन में सादगी थी। दूसरों से हमेशा मैत्रीपूर्ण और सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करते। शोधकार्य के अतिरिक्त परिवार के औद्योगिक कार्यों की देख-भाल करते। तमाम व्यस्तताओं के बावजूद वह मिलने-जुलने वालों के लिए समय निकालते। लोग अपनी कठिनाइयां एवं कहानियां सुनाकर समय व्यर्थ करते। एक बार किसी ने पूछा – 'क्या आपका बहुमूल्य समय नष्ट नहीं हो रहा है?'

इस पर डॉ. साराभाई बोले – 'अपने इतने विशाल देश में लोग कहां-कहां से आते हैं, और प्रत्येक व्यक्ति इतना भाग्यशाली नहीं कि वह ज्ञान उसे मिला हो, जो हमें मिला है। इसीलिए हमें उनके मन की बात सुन लेनी चाहिए, समझ लेनी चाहिए।'

## सब की मदद

विद्यार्थी ही नहीं, डॉ0 साराभाई किसी भी व्यक्ति की सहायता के लिए तत्पर रहते, जो तनिक भी कष्ट में हो। एक दिन एक कुली बक्सों से भरी हाथ-गाड़ी संस्था में ले जा रहा था, लेकिन वह आसानी से खींच नहीं पा रहा था। डॉ. साराभाई ने जब देखा, तो उनसे न रहा गया। वह दौड़े-दौड़े आए और गाड़ी चलाने में कुली की सहायता की।

अपनी सुबह का खाता राष्ट्रभाषा हिन्दी से खोलिए।
गुड मार्निंग नहीं 'सुप्रभात' बोलिए।

लेख

# ईदगाह

रमजान के पूरे तीस रोजों के बाद ईद आयी है। कितना मनोहर, कितना सुहावना प्रभाव है। वृक्षों पर अजीब हरियाली है, खेतों में कुछ अजीब रौनक है, आसमान पर कुछ अजीब लालिमा है। आज का सूर्य देखो, कितना प्यारा, कितना शीतल है, यानी संसार को ईद की बधाई दे रहा है। गाँव में कितनी हलचल है। ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही हैं। किसी के कुरते में बटन नहीं है, पड़ोस के घर में सुई-धागा लेने दौड़ा जा रहा है। किसी के जूते कड़े हो गए हैं, उनमें तेल डालने के लिए तेली के घर पर भागा जाता है। जल्दी-जल्दी बैलों को सानी-पानी दे दें। ईदगाह से लौटते-लौटते दोपहर हो जाएगी। तीन कोस का पैदल रास्ता, फिर सैकड़ों आदमियों से मिलना-जुलना , दोपहर के पहले लौटना असम्भव है। लड़के सबसे ज्यादा प्रसन्न हैं। किसी ने एक रोजा रखा है, वह भी दोपहर तक, किसी ने वह भी नहीं, लेकिन ईदगाह जाने की खुशी उनके हिस्से की चीज है। रोजे बड़े-बूढ़ो के लिए होंगे। इनके लिए तो ईद है। रोज ईद का नाम रटते थे, आज वह आ गई। अब जल्दी पड़ी है कि लोग ईदगाह क्यों नहीं चलते। इन्हें गृहस्थी चिंताओं से क्या प्रयोजन! सेवैयों के लिए दूध और शक्कर घर में है या नहीं, इनकी बला से, ये तो सेवैयां खाएंगे। वह क्या जानें कि अब्बाजान क्यों बदहवास चौधरी कायमअली के घर दौड़े जा रहे हैं। उन्हें क्या खबर कि चौधरी आँखें बदल लें, तो यह सारी ईद मुहर्रम हो जाए। उनकी अपनी जेबों में तो कुबेर का धन भरा हुआ है। बार-बार जेब से अपना खजाना निकालकर गिनते हैं और खुश होकर फिर रख लेते हैं। महमूद गिनता है, एक-दो, दस,-बारह, उसके पास बारह पैसे हैं। मोहसिन के पास एक, दो, तीन, आठ, नौ, पंद्रह पैसे हैं। इन्हीं अनगिनती पैसों में अनगिनती चीजें लाएंगें— खिलौने, मिठाइयां, बिगुल, गेंद और जाने क्या-क्या।

और सबसे ज्यादा प्रसन्न है हामिद। वह चार-पाँच साल का गरीब सूरत, दुबला-पतला लड़का, जिसका बाप गत वर्ष हैजे की भेंट हो गया और माँ न जाने क्यों पीली होती-होती एक दिन मर गई। किसी को पता क्या बीमारी है। कहती तो कौन सुनने वाला था? दिल पर जो कुछ बीतती थी, वह दिल में ही सहती थी ओर जब न सहा गया,. तो संसार से विदा हो गई। अब हामिद अपनी बूढ़ी दादी अमीना की गोद में सोता है और उतना ही प्रसन्न है। उसके अब्बाजान रूपये कमाने गए हैं। बहुत-सी थैलियाँ लेकर आएंगे। अम्मीजान अल्ला मियाँ के घर से उसके लिए बड़ी अच्छी-अच्छी चीजें लाने गई हैं, इसलिए हामिद प्रसन्न है। आशा तो बड़ी चीज है, और फिर बच्चों की आशा! उनकी कल्पना तो राई का पर्वत बना लेती है। हामिद के पाँव में जूते नहीं हैं, सिर पर एक पुरानी-धुरानी टोपी है, जिसका गोटा काला पड़ गया है, फिर भी वह प्रसन्न है। जब उसके अब्बाजान थैलियाँ और अम्मीजान नियमतें लेकर आएंगी, तो वह दिल से अरमान निकाल लेगा। तब देखेगा, मोहसिन, नूरे और सम्मी कहाँ से उतने पैसे निकालेंगे। अभागिन अमीना अपनी कोठरी में बैठी रो रही है। आज ईद का दिन, उसके घर में दाना नहीं! आज आबिद होता, तो क्या इसी तरह ईद आती और चली जाती! इस अन्धकार और निराशा में वह डूबी जा रही है। किसने बुलाया था इस निगोड़ी ईद को? इस घर में उसका काम नहीं, लेकिन हामिद!

उसे किसी के मरने-जीने के क्या मतलब? उसके, अन्दर प्रकाश है, बाहर आशा। विपत्ति अपना सारा दलबल लेकर आये, हामिद की आनंद-भरी चितबन उसका विध्वंस कर देगी।

हामिद भीतर जाकर दादी से कहता है—तुम डरना नहीं अम्माँ, मैं सबसे पहले आऊँगा। बिल्कुल न डरना।

अमीना का दिल कचोट रहा है। गाँव के बच्चे अपने-अपने बाप के साथ जा रहे हैं। हामिद का बाप अमीना के सिवा और कौन है! उसे कैसे अकेले मेले जाने दे? उस भीड़-भाड़ में बच्चा कहीं खो जाए तो क्या हो? नहीं, अमीना उसे यों न जाने देगी। नन्हीं -सी जान! तीन कोस चलेगा कैसे? पैर में छाले पड़ जाएंगे। जूते भी तो नहीं हैं। वह थोड़ी-थोड़ी दूर पर उसे गोद में ले लेती, लेकिन यहाँ सेवैयाँ कौन पकाएगा? पैसे होते तो लौटते-लौटते सब सामग्री जमा करके चटपट बना लेती। यहाँ तो घंटों चीजें जमा करते लगेंगे। माँगे का ही तो भरोसा ठहरा। उस दिन फहीमन के कपड़े सिले थे। आठ आने पैसे मिले थे। उस अठन्नी को ईमान की तरह बचाती चली आती थी इसी ईद के लिए लेकिन कल ग्वालन सिर पर सवार हो गई तो क्या करती? हामिद के लिए कुछ नहीं है, तो दो पैसे का दूध तो चाहिए ही। अब तो कुल दो आने पैसे बच रहे हैं। तीन पैसे हामिद की जेब में, पांच अमीना के बटुवें में। यही तो बिसात है और ईद का त्यौहार, अल्लाह ही बेड़ा पार लगाए। धोबन और नाइन ओर मेहतरानी और चुड़िहारिन सभी तो आएंगी। सभी को सेवैयाँ चाहिए और थोड़ा किसी को आँखों नहीं लगता। किस-किस सें मुँह चुरायेगी? और मुँह क्यों चुराए? साल-भर का त्योहार हैं। जिन्दगी खैरियत से रहे, उनकी तकदीर भी तो उसी के साथ है: बच्चे को खुदा सलामत रखे, ये दिन भी कट जाएंगे।

गाँव से मेला चला। और बच्चों के साथ हामिद भी जा रहा था। कभी सबके सब दौड़कर आगे निकल जाते। फिर किसी पेड़ के नींचे खड़े होकर साथ वालों का इंतजार करते। यह लोग क्यों इतना धीरे-धीरे चल रहे हैं? हामिद के पैरों में तो जैसे पर लग गए हैं। वह कभी थक सकता है? शहर का दामन आ गया। सड़क के दोनों ओर अमीरों के बगीचे हैं। पक्की चारदीवारी बनी हुई है। पेड़ो में आम और लीचियाँ लगी हुई हैं। कभी-कभी कोई लड़का कंकड़ी उठाकर आम पर निशाना लगाता है। माली अंदर से गाली देता हुआ निकलता है। लड़के वहाँ से एक फलाँग पर हैं। खूब हँस रहे हैं। माली को कैसा उल्लू बनाया है।

बड़ी-बड़ी इमारतें आने लगीं। यह अदालत है, यह कॉलेज है, यह क्लब घर है। इतने बड़े कालेज में कितने लड़के पढ़ते होंगे? सब लड़के नहीं हैं जी! बड़े-बड़े आदमी हैं, सच! उनकी बड़ी-बड़ी मूँछे हैं। इतने बड़े हो गए, अभी तक पढ़ते जाते हैं। न जाने कब तक पढ़ेंगे ओर क्या करेंगे इतना पढ़कर! हामिद के मदरसे में दो-तीन बड़े-बड़े लड़के हैं, बिल्कुल तीन कौड़ी के। रोज मार खाते हैं, काम से जी चुराने वाले। इस जगह भी उसी तरह के लोग होंगे ओर क्या। क्लब-घर में जादू होता है। सुना है, यहाँ मुर्दो की खोपड़ियां दौड़ती हैं। और बड़े-बड़े तमाशे होते हैं, पर किसी को अंदर नहीं जाने देते। और वहाँ शाम को साहब लोग खेलते हैं। बड़े-बड़े आदमी खेलते हैं, मूँछो-दाढ़ी वाले। और मेमें भी खेलती हैं, सच! हमारी अम्माँ को यह दे दो, क्या नाम है, बैट, तो उसे पकड़ ही न सके। घुमाते ही लुढ़क जाएं।

महमूद ने कहा—हमारी अम्मीजान का तो हाथ कांपने लगे, अल्लाह कसम।

मोहसिन बोला—चलों, मनों आटा पीस डालती हैं। जरा-सा बैट पकड़ लेगी, तो हाथ कांपने लगेंगे! सैंकड़ों घड़े पानी रोज निकालती हैं। पाँच घड़े तो तेरी भैंस पी जाती है। किसी मेम को एक घड़ा पानी भरना पड़े, तो आँखों तक अँधेरा छा जाए।

महमूद—लेकिन दौड़तीं तो नहीं, उछल-कूद तो नहीं सकतीं।

मोहसिन—हाँ, उछल-कूद तो नहीं सकतीं; लेकिन उस दिन मेरी गाय खुल गई थी और चौधरी के खेत में जा पड़ी थी, अम्माँ इतना तेज दौड़ी कि मैं उन्हें न पा सका, सच।

हामिद को यकीन न आया—ऐसे रूपये जिन्नात को कहाँ से मिल जाएँगीं?

मोहसिन ने कहा—जिन्नात को रूपये की क्या कमी? जिस खजाने में चाहें चले जाएं। लोहे के दरवाजे तक उन्हें नहीं रोक सकते जनाब, आप हैं किस फेर में! हीरे-जवाहरात तक उनके पास रहते हैं। जिससे खुश हो गए, उसे टोकरों जवाहरात दे दिए। अभी यहीं बैठे हैं, पाँच मिनट में कलकत्ता पहुँच जाए।

हामिद ने फिर पूछा—जिन्नात बहुत बड़े-बड़े होते हैं?

मोहसिन—एक-एक सिर आसमान के बराबर होता है जी! जमीन पर खड़ा हो जाए तो उसका सिर आसमान से जा लगे, मगर चाहे तो एक लोटे में घुस जाए।

हामिद—लोग उन्हें कैसे खुश करते होंगे? कोई मुझे यह मंतर बता दे तो एक जिन्न को खुश कर लूँ।

मोहसिन—अब यह तो न जानता, लेकिन चौधरी साहब के काबू में बहुत-से जिन्नात हैं। कोई चीज चोरी हो जाए चौधरी साहब उसका पता लगा देंगे ओर चोर का नाम बता देगें। जुमराती का बछवा उस दिन खो गया था। तीन दिन हैरान हुए, कहीं न मिला तब झख मारकर चौधरी के पास गए। चौधरी ने तुरन्त बता दिया, मवेशीखाने में है और वहीं मिला। जिन्नात आकर उन्हें सारे जहान की खबर दे जाते हैं।

अब उसकी समझ में और गया कि चौधरी के पास क्यों इतना धन है और क्यों उनका इतना सम्मान है। आगे चले। यह पुलिस लाइन है। यहीं सब कानिसटिबिल कवायद करते हैं। रैटन! फाय फो! रात को बेचारे घूम-घूमकर पहरा देते हैं, नहीं चोरियाँ हो जाएँ। मोहसिन ने प्रतिवाद किया—यह कानिसटिबिल पहरा देते हैं? तभी तुम बहुत जानते हों अजी हजरत, यह चोरी करते हैं। शहर के जितने चोर-डाकू हैं, सब इनसे मुहल्ले में जाकर 'जागते रहो! जागते रहो!' पुकारते हैं। तभी इन लोगों के पास इतने रूपये आते हैं। मेरे मामू एक थाने में कानिसटिबिल हैं। बीस रूपया महीना पाते हैं, लेकिन पचास रूपये घर भेजते हैं। अल्ला कसम! मैंने एक बार पूछा था कि मामू, आप इतने रूपये कहाँ से पाते हैं? हँसकर कहने लगे—बेटा, अल्लाह देता है। फिर आप ही बोले—हम लोग चाहे तो एक दिन में लाखों मार लाए। हम तो इतना ही लेते हैं, जिसमें अपनी बदनामी न हो और नौकरी न चली जाए।

हामिद ने पूछा—यह लोग चोरी करवाते हैं, तो कोई इन्हें पकड़ता नहीं?

मोहसिन उसकी नादानी पर दया दिखाकर बोला..अरे, पागल! इन्हें कौन पकड़ेगा! पकड़ने वाले तो यह लोग खुद हैं, लेकिन अल्ला, इन्हें सजा भी खूब देता है। हराम का माल हराम में जाता है। थोड़े ही दिन हुए, मामू के घर में आग लग गई। सारी लाई-पूँजी जल गई। एक बरतन तक न बचा। कई दिन पेड़ के नीचे सोए, अल्लाह कसम, पेड़ के नीचे! फिर न जाने कहाँ से एक सौ कर्ज लाए तो बरतन-भाँड़े आए।

हामिद—एक-सौ तो पचास से ज्यादा होते है?

‘कहाँ पचास, कहाँ एक सौ। पचास एक थैली-भर होता है। सौ तो दो थैलियों में भी न आए?

अब बस्ती घनी होने लगी। ईदगाह जाने वालो की टोलियां नजर आने लगीं। एक से एक भड़कीले वस्त्र पहने हुए। कोई इक्के-ताँगे पर सवार, कोई मोटर पर, सभी इत्र में बसे, सभी के दिलों में उमंग। ग्रामीणों का यह छोटा-सा दल अपनी विपन्नता से बेखबर, सन्तोष ओर धैर्य में मगन चला जा रहा था। बच्चों के लिए नगर की सभी चीजें अनोखी थीं। जिस चीज की ओर ताकते, ताकते ही रह जाते और पीछे से हार्न की आवाज होने पर भी न चेतते। हामिद तो मोटर के नीचे जाते-जाते बचा।

सहसा ईदगाह नजर आई। ऊपर इमली के घने वृक्षों की छाया है। नीचे पक्का फर्श है, जिस पर जाजम बिछा हुआ है और रोजेदारों की पंक्तियां एक के पीछे एक न जाने कहां तक चली गई हैं, पक्की जगत के नीचे तक, जहां जाजम भी नहीं है। नए आने वाले आकर पीछे की कतार में खड़े हो जाते हैं। आगे जगह नहीं है। यहां कोई धन और पद नहीं देखता। इस्लाम की निगाह में सब बराबर हैं। इन ग्रामीणों ने भी वजू किया और पिछली पंक्ति में खड़े हो गए। कितना सुन्दर संचालन है, कितनी सुन्दर व्यवस्था! लाखों सिर एक साथ सजदे में झुक जाते हैं, फिर सबके सब एक साथ खड़े हो जाते हैं, एक साथ झुकते हैं, और एक साथ खड़े हो जाते हैं, एक साथ खड़े हो जाते हैं, एक साथ झुकते हैं, और एक साथ खड़े हो जाते हैं, कई बार यही क्रिया होती है, जैसे बिजली की लाखों बत्तियाँ एक साथ प्रदीप्त हों और एक साथ बुझ जाएं, और यही क्रम चलता, रहे। कितना अपूर्व दृश्य था, जिसकी सामूहिक क्रियाएं, विस्तार और अनंतता हृदय को श्रद्धा, गर्व और आत्मानंद से भर देती थीं, मानों भ्रातृत्व का एक सूत्र इन समस्त आत्माओं को एक लड़ी में पिरोए हुए हैं।

नमाज खत्म हो गई। लोग आपस में गले मिल रहे हैं। तब मिठाई और खिलौने की दुकान पर धावा होता है। ग्रामीणों का यह दल इस विषय में बालकों से कम उत्साही नहीं है। यह देखो, हिंडोला हैं एक पैसा देकर चढ़ जाओ। कभी आसमान पर जाते हुए मालूम होंगें, कभी जमीन पर गिरते हुए। यह चर्खी है, लकड़ी के हाथी, घोड़े, ऊँट, छड़ों में लटके हुए हैं। एक पैसा देकर बैठ जाओ और पच्चीस चक्करों का मजा लो। महमूद और मोहसिन और नूरे और  सम्मी इन घोड़ों और ऊँटो पर बैठते हैं। हामिद दूर खड़ा है। तीन ही पैसे तो उसके पास हैं। अपने कोष का एक तिहाई जरा-सा चक्कर खाने के लिए नहीं दे सकता।

सब चर्खियों से उतरते हैं। अब खिलौने लेंगे। उधर दुकानों की कतार लगी हुई है। तरह-तरह के खिलौने हैं—सिपाही और गुजरिया, राज और वकी, भिश्ती और धोबिन और साधु। वह! कित्ते सुन्दर खिलौने हैं। अब बोलना ही चाहते हैं। महमूद सिपाही लेता है, खाकी वर्दी और लाल पगड़ीवाला, कंधे पर बंदूक रखे हुए, मालूम होता है, अभी कवायद किए चला आ रहा है। मोहसिन को भिश्ती पसंद आया। कमर झुकी हुई है, ऊपर मशक रखे हुए हैं मशक का मुँह एक हाथ से पकड़े हुए है। कितना प्रसन्न है! शायद कोई गीत गा रहा है। बस, मशक से पानी उड़ेला ही चाहता है। नूरे को वकील से प्रेम है। कैसी विद्वत्ता है उसके मुख पर! काला चोगा, नीचे सफेद अचकन, अचकन के सामने की जेब में घड़ी, सुनहरी जंजीर, एक हाथ में कानून का पोथा लिये हुए। मालूम होता है, अभी किसी अदालत से जिरह या बहस किए चले आ रहे है। यह सब दो-दो पैसे के खिलौने हैं। हामिद के पास कुल तीन पैसे हैं, इतने महँगे खिलौने वह कैसे ले? खिलौना कहीं हाथ से छूट पड़े तो चूर-चूर हो जाए। जरा पानी पड़े तो सारा रंग घुल जाए। ऐसे खिलौने लेकर वह क्या करेगा, किस काम के!

मोहसिन कहता है—मेरा भिश्ती रोज पानी दे जाएगा साँझ-सबेरे

महमूद—और मेरा सिपाही घर का पहरा देगा कोई चोर आएगा, तो फौरन बंदूक से फैर कर देगा।

सम्मी— और मेरी धोबिन रोज कपड़े धोएगी।

हामिद खिलौनों की निंदा करता है—मिट्टी ही के तो हैं, गिरे तो चकनाचूर हो जाएं, लेकिन ललचाई हुई आँखों से खिलौनों को देख रहा है और चाहता है कि जरा देर के लिए उन्हें हाथ में ले सकता। उसके हाथ अनायास ही लपकते हैं, लेकिन लड़के इतने त्यागी नहीं होते हैं, विशेषकर जब अभी नया शौक है। हामिद ललचता रह जाता है।

खिलौने के बाद मिठाइयाँ आती हैं। किसी ने रेवड़ियां ली हैं, किसी ने गुलाबजामुन किसी ने सोहन हलवा। मजे से खा रहे हैं। हामिद बिरादरी से पृथक् है। अभागे के पास तीन पैसे हैं। क्यों नहीं कुछ लेकर खाता? ललचाई आँखों से सबकी ओर देखता है।

मोहसिन कहता है—हामिद रेवड़ी ले जा, कितनी खुशबूदार है!

हामिद को संदेह हुआ, ये केवल क्रूर विनोद है मोहसिन इतना उदार नहीं है, लेकिन यह जानकर भी वह उसके पास जाता है। मोहसिन दोने से एक रेवड़ी निकालकर हामिद की ओर बढ़ाता है। हामिद हाथ फैलाता है। मोहसिन रेवड़ी अपने मुँह में रख लेता है। महमूद नूरे ओर सम्मी खूब तालियाँ बजा-बजाकर हँसते हैं। हामिद खिसिया जाता है।

मोहसिन—अच्छा, अबकी जरूर देंगे हामिद, अल्लाह कसम, ले जा।

हामिद—रखे रहो। क्या मेरे पास पैसे नहीं है?

सम्मी—तीन ही पैसे तो हैं। तीन पैसे में क्या-क्या लोगे?

महमूद—हमसे गुलाबजामुन ले जाओ हामिद। मोहमिन बदमाश है।

हामिद—मिठाई कौन बड़ी नेमत है। किताब में इसकी कितनी बुराइयाँ लिखी हैं।

मोहसिन—लेकिन दिल में कह रहे होंगे कि मिले तो खा लें। अपने पैसे क्यों नहीं निकालते?

महमूद—हम समझते हैं, इसकी चालाकी। जब हमारे सारे पैसे खर्च हो जाएंगे, तो हमें ललचा- ललचाकर खाएगा।

मिठाइयों के बाद कुछ दुकानें लोहे की चीजों की, कुछ गिलट और कुछ नकली गहनों की। लड़कों के लिए यहाँ कोई आकर्षण न था। वे सब आगे बढ़ जाते हैं, हामिद लोहे की दुकान पर रूक जाता है। कई चिमटे रखे हुए थे। उसे ख्याल आया, दादी के पास चिमटा नहीं है। तवे से रोटियाँ उतारती हैं, तो हाथ जल जाता है। अगर वह चिमटा ले जाकर दादी को दे दे तो वह कितनी प्रसन्न होगी! फिर उनकी ऊगलियाँ कभी न जलेंगी। घर में एक काम की चीज हो जाएगी। खिलौने से क्या फायदा? व्यर्थ में पैसे खराब होते हैं। जरा देर ही तो खुशी होती है। फिर तो खिलौने को कोई आँख उठाकर नहीं देखता। यह तो घर पहुँचते-पहुँचते टूट-फूट कर बराबर हो जाएंगे। चिमटा कितने काम की चीज है। रोटियाँ तवे से उतार लो, चूल्हें में सेक लो। कोई आग माँगने आये तो चटपट चूल्हे से आग निकालकर उसे दे दो। अम्माँ बेचारी को कहाँ फुरसत है कि बाजार आएं और इतने पैसे ही कहाँ मिलते हैं? रोज हाथ जला लेती हैं।

हामिद के साथी आगे बढ़ गए हैं। सबील पर सबके सब शर्बत पी रहे हैं। देखो, सब कितने लालची हैं। इतनी मिठाइयाँ लीं, मुझे किसी ने एक भी न दी। उस पर कहते है, मेरे साथ खेलो। मेरा यह काम करो। अब अगर किसी ने कोई काम करने को कहा, तो पूछूँगा। खाएँ मिठाइयाँ, आप मुँह सड़ेगा, फोड़े-फुन्सियां निकलेंगी, आप ही जबान चटोरी हो जाएगी। तब घर से पैसे चुराएंगे और मार खाएंगे। किताब में झूठी बातें थोड़े ही लिखी हैं। मेरी जबान क्यों खराब होगी? अम्माँ चिमटा देखते ही दौड़कर मेरे हाथ से ले लेंगी और कहेंगी—मेरा बच्चा अम्माँ के लिए चिमटा लाया है। कितना अच्छा लड़का है। इन लोगों के खिलौने पर कौन इन्हें दुआएं देगा? बड़ों की दुआएं सीधे अल्लाह के दरबार में पहुँचती हैं, और तुरंत सुनी जाती हैं। मैं भी इनके मिजाज क्यों सहूँ? हम गरीब सही, किसी से कुछ मांगने तो नहीं जाते। आखिर अब्बाजान कभीं न कभी आएंगे। अम्मा भी आंएगी ही। फिर इन लोगों से पूछूँगा, कितने खिलौने लोगे? एक-एक को टोकरियों खिलौने दूँ और दिखा दूं कि दोस्तों के साथ इस तरह का सलूक किया जाता है। यह नहीं कि एक पैसे की रेवड़ियाँ लीं, तो चिढ़ा-चिढ़ाकर खाने लगे। सबके सब हँसेंगे कि हामिद ने चिमटा लिया है। हंसें! मेरी बला से! उसने दुकानदार से पूछा—यह चिमटा कितने का है?

दुकानदार ने उसकी ओर देखा और कोई आदमी साथ न देखकर कहा—तुम्हारे काम का नहीं है जी!

'बिकाऊ है कि नहीं?'

'बिकाऊ क्यों नहीं है? और यहाँ क्यों लाद लाए हैं?'

तो बताते क्यों नहीं, कै पैसे का है?'

'छ: पैसे लगेंगे।'

हामिद का दिल बैठ गया।

'ठीक-ठीक पाँच पैसे लगेंगे, लेना हो लो, नहीं चलते बनो।'

हामिद ने कलेजा मजबूत करके कहा तीन पैसे लोगे?

यह कहता हुआ व आगे बढ़ गया कि दुकानदार की घुड़कियां न सुने। लेकिन दुकानदार ने घुड़कियां नहीं दी। बुलाकर चिमटा दे दिया। हामिद ने उसे इस तरह कंधे पर रखा, मानों बंदूक है और शान से अकड़ता हुआ संगियों के पास आया। जरा सुनें, सबके सब क्या-क्या आलोचनाएं करते हैं!

मोहसिन ने हँसकर कहा—यह चिमटा क्यों लाया पगले, इससे क्या करेगा?

हामिद ने चिमटे को जमीन पर पटकर कहा—जरा अपना भिश्ती जमीन पर गिरा दो। सारी पसलियाँ चूर-चूर हो जाएगी बेचारे की।

महमूद बोला—तो यह चिमटा कोई खिलौना है?

हामिद—खिलौना क्यों नही है! अभी कन्धे पर रखा, बंदूक हो गई। हाथ में ले लिया, फकीरों का चिमटा हो गया। चाहूँ तो इससे मजीरे का काम ले सकता हूँ। एक चिमटा जमा दूँ, तो तुम लोगों के सारे खिलौनों की जान निकल जाए। तुम्हारे खिलौने कितना ही जोर लगाएं, मेरे चिमटे का बाल भी बांका नहीं कर सकते मेरा बहादुर शेर है चिमटा।

सम्मी ने खँजरी ली थी। प्रभावित होकर बोला—मेरी खँजरी से बदलोगे? दो आने की है।

हामिद ने खँजरी की ओर उपेक्षा से देखा-मेरा चिमटा चाहे तो तुम्हारी खँजरी का पेट फाड़ डाले। बस, एक चमड़े की झिल्ली लगा दी, ढब-ढब बोलने लगी। जरा-सा पानी लग जाए तो खत्म हो जाए। मेरा बहादुर चिमटा आग में, पानी में, आँधी में, तूफान में बराबर डटा खड़ा रहेगा।

चिमटे ने सभी को मोहित कर लिया, अब पैसे किसके पास धरे हैं? फिर मेले से दूर निकल आए हैं, नौ कब के बज गए, धूप तेज हो रही है। घर पहुंचने की जल्दी हो रही है। बाप से जिद भी करें, तो चिमटा नहीं मिल सकता। हामिद है बड़ा चालाक। इसीलिए बदमाश ने अपने पैसे बचा रखे थे।

अब बालकों के दो दल हो गए हैं। मोहसिन, महमूद, सम्मी और नूरे एक तरफ हैं, हामिद अकेला दूसरी तरफ। शास्त्रार्थ हो रहा है। सम्मी तो विधर्मी हो गया! दूसरे पक्ष से जा मिला, लेकिन मोहसिन, महमूद और नूरे भी हामिद से एक-एक, दो-दो साल बड़े होने पर भी हामिद के आघातों से आतंकित हो उठे हैं। उसके पास न्याय का बल है और नीति की शक्ति। एक ओर मिट्टी है, दूसरी ओर लोहा, जो इस वक्त अपने को फौलाद कह रहा है। वह अजेय है, घातक है। अगर कोई शेर आ जाए मियाँ भिश्ती के छक्के छूट जाएं, जो मियाँ सिपाही मिट्टी की बंदूक छोड़कर भागे, वकील साहब की नानी मर जाए, चोगे में मुंह छिपाकर जमीन पर लेट जाएं। मगर यह चिमटा, यह बहादुर, यह रूस्तमे-हिंद लपककर शेर की गरदन पर सवार हो जाएगा और उसकी ऑंखे निकाल लेगा।

मोहसिन ने एड़ी—चोटी का जारे लगाकर कहा—अच्छा, पानी तो नहीं भर सकता?

हामिद ने चिमटे को सीधा खड़ा करके कहा—भिश्ती को एक डांट लगाएगा, तो दौड़ा हुआ पानी लाकर उसके द्वार पर छिड़कने लगेगा।

मोहसिन परास्त हो गया, पर महमूद ने कुमुक पहुँचाई—अगर बचा पकड़ जाएं तो अदालत में भागे-भागे फिरेंगे। तब तो वकील साहब के पैरों पड़ेगे।

हामिद इस प्रबल तर्क का जवाब न दे सका। उसने पूछा—हमें पकड़ने कौने आएगा?

नूरे ने अकड़कर कहा—यह सिपाही बंदूकवाला।

हामिद ने मुँह चिढ़ाकर कहा—यह बेचारे हम बहादुर रूस्तमे—हिंद को पकड़ेगें! अच्छा लाओ, अभी जरा कुश्ती हो जाए। इसकी सूरत देखकर दूर से भागेंगे। पकड़ेगें क्या बेचारे!

मोहसिन को एक नई चोट सूझ गई—तुम्हारे चिमटे का मुँह रोज आग में जलेगा।

उसने समझा था कि हामिद लाजवाब हो जाएगा, लेकिन यह बात न हुई। हामिद ने तुरंत जवाब दिया—आग में बहादुर ही कूदते हैं जनाब, तुम्हारे यह वकील, सिपाही और भिश्ती लैडियों की तरह घर में घुस जाएंगे। आग में वह काम है, जो यह रूस्तमे-हिन्द ही कर सकता है।

महमूद ने एक जोर लगाया—वकील साहब कुरसी—मेज पर बैठेगे, तुम्हारा चिमटा तो बाबरचीखाने में जमीन पर पड़ा रहने के सिवा और क्या कर सकता है?

इस तर्क ने सम्मी और नूरे को भी सजी कर दिया! कितने ठिकाने की बात कही है पट्ठे ने! चिमटा बावरचीखाने में पड़ा रहने के सिवा और क्या कर सकता है?

हामिद को कोई फड़कता हुआ जवाब न सूझा, तो उसने धाँधली शुरू की—मेरा चिमटा बावरचीखाने में नहीं रहेगा। वकील साहब कुर्सी पर बैठेगें, तो जाकर उन्हे जमीन पर पटक देगा और उनका कानून उनके पेट में डाल देगा।

बात कुछ बनी नहीं। खाली गाली-गलौज थी, लेकिन कानून को पेट में डालने वाली बात छा गई। ऐसी छा गई कि तीनों सूरमा मुँह ताकते रह गए मानो कोई धेलचा कानकौआ किसी गंडेवाले कनकौए को काट गया हो। कानून मुँह से बाहर निकलने वाली चीज है। उसको पेट के अन्दर डाल दिया जाना बेतुकी-सी बात होने पर भी कुछ नयापन रखती है। हामिद ने मैदान मार लिया। उसका चिमटा रूस्तमे-हिन्द है। अब इसमें मोहसिन, महमूद नूरे, सम्मी किसी को भी आपत्ति नहीं हो सकती।

विजेता को हारनेवालों से जो सत्कार मिलना स्वाभाविक है, वह हामिद को भी मिले। औरों ने तीन-तीन, चार-चार आने पैसे खर्च किए, पर कोई काम की चीज न ले सके। हामिद ने तीन पैसे में रंग जमा लिया। सच ही तो है, खिलौनों का क्या भरोसा? टूट-फूट जाएंगें। हामिद का चिमटा तो बना रहेगा बरसों?

संधि की शर्ते तय होने लगीं। मोहसिन ने कहा—जरा अपना चिमटा दो, हम भी देखें। तुम हमार भिश्ती लेकर देखो।

महमूद और नूरे ने भी अपने-अपने खिलौने पेश किए।

हामिद को इन शर्तो को मानने में कोई आपत्ति न थी। चिमटा बारी-बारी से सबके हाथ में गया, और उनके खिलौने बारी-बारी से हामिद के हाथ में आए। कितने खूबसूरत खिलौने हैं।

हामिद ने हारने वालों के आँसू पोंछे—मैं तुम्हे चिढ़ा रहा था, सच! यह चिमटा भला, इन खिलौनों की क्या बराबरी करेगा, मालूम होता है, अब बोले, अब बोले।

लेकिन मोहसिन की पार्टी को इस दिलासे से संतोष नहीं होता। चिमटे का सिल्का खूब बैठ गया है। चिपका हुआ टिकट अब पानी से नहीं छूट रहा है।

मोहसिन—लेकिन इन खिलौनों के लिए कोई हमें दुआ तो न देगा?

महमूद—दुआ को लिए फिरते हो। उल्टे मार न पड़े। अम्मां जरूर कहेगी कि मेले में यही मिट्टी के खिलौने मिले?

हामिद को स्वीकार करना पड़ा कि खिलौनों को देखकर किसी की मां इतनी खुश न होगी, जितनी दादी चिमटे को देखकर होंगी। तीन पैसों ही में तो उसे सब-कुछ करना था और उन पैसों के इस उपयों पर पछतावे की बिल्कुल जरूरत न थी। फिर अब तो चिमटा रूस्तमे—हिन्द है और सभी खिलौनों का बादशाह।

रास्ते में महमूद को भूख लगी। उसके बाप ने केले खाने को दियें। महमूद ने केवल हामिद को साझी बनाया। उसके अन्य मित्र मुंह ताकते रह गए। यह उस चिमटे का प्रसाद था।

ग्यारह बजे गाँव में हलचल मच गई। मेलेवाले आ गए। मोहसिन की छोटी बहन दौड़कर भिश्ती उसके हाथ से छीन लायी और मारे खुशी के जा उछली, तो मियाँ भिश्ती नीचे आ रहे और सुरलोक सिधारे। इस पर भाई-बहन में मार-पीट हुई। दोनों खूब रोए। उसकी अम्माँ यह शोर सुनकर बिगड़ी और दोनों को ऊपर से दो-दो चाँटे और लगाए।

मियाँ नूरे के वकील का अंत उनके प्रतिष्ठानुकूल इससे ज्यादा गौरवमय हुआ। वकील जमीन पर या ताक पर तो नहीं बैठ सकता। उसकी मर्यादा का विचार तो करना ही होगा। दीवार में खूँटियाँ गाड़ी गई। उन पर लकड़ी का एक पटरा रखा गया। पटरे पर कागज का कालीन बिछाया गया। वकील साहब राजा भोज की भाँति सिंहासन पर विराजे। नूरे ने उन्हें पंखा झलना शुरू किया। अदालतों में  बिजली के पंखे रहते हैं। क्या यहाँ मामूली पंखा भी न है! कानून की गर्मी दिमाग पर चढ़ जाएगी कि नहीं? बाँस का पंखा आया और नूरे हवा करने लगें मालूम नहीं, पंखे की हवा से या पंखे की चोट से वकील साहब स्वर्गलोक से मृत्युलोक में आ रहे और उनका माटी का चोला माटी में मिल गया! फिर बड़े जोर-शोर से मातम हुआ और वकील साहब की अस्थि घूरे पर डाल दी गई।

अब रहा महमूद का सिपाही। उसे चटपट गाँव का पहरा देने का चार्ज मिल गया, लेकिन पुलिस का सिपाही कोई साधारण व्यक्ति तो नहीं, जो अपने पैरों चलें वह पालकी पर चलेगा। एक टोकरी आई, उसमें कुछ लाल रंग के फटे-पुराने चिथड़े बिछाए गए जिसमें सिपाही साहब आराम से लेटे। नूरे ने यह टोकरी उठाई और अपने द्वार का चक्कर लगाने लगे। उनके दोनों छोटे भाई सिपाही की तरह 'छोनेवाले, जागते लहो' पुकारते चलते हैं। मगर रात तो अँधेरी होनी चाहिए, नूरे को ठोकर लग जाती है। टोकरी उसके हाथ से छूटकर गिर पड़ती है और मियाँ सिपाही अपनी बन्दूक लिये जमीन पर आ जाते हैं और उनकी

महमूद को आज ज्ञात हुआ कि वह अच्छा डाक्टर है। उसको ऐसा मरहम मिला गया है जिससे वह टूटी टाँग को आनन-फानन जोड़ सकता है। केवल गूलर का दूध चाहिए। गूलर का दूध आता है। टाँग जवाब दे देती है। शल्य-क्रिया असफल हुई, तब उसकी दूसरी टाँग भी तोड़ दी जाती है। अब कम-से-कम एक जगह आराम से बैठ तो सकता है। एक टाँग से तो न चल सकता था, न बैठ सकता था। अब वह सिपाही संन्यासी हो गया है। अपनी जगह पर बैठा-बैठा पहरा देता है। कभी-कभी देवता भी बन जाता है। उसके सिर का झालरदार साफा खुरच दिया गया है। अब उसका जितना रूपांतर चाहो, कर सकते हो। कभी-कभी तो उससे बाट का काम भी लिया जाता है।

अब मियाँ हामिद का हाल सुनिए। अमीना उसकी आवाज सुनते ही दौड़ी और उसे गोद में उठाकर प्यार करने लगी। सहसा उसके हाथ में चिमटा देखकर वह चौंकी।

'यह चिमटा कहां था?'

'मैंने मोल लिया है।'

'कै पैसे में?

'तीन पैसे दिये।'

अमीना ने छाती पीट ली। यह कैसा बेसमझ लड़का है कि दोपहर हुआ, कुछ खाया न पिया। लाया क्या, चिमटा! 'सारे मेले में तुझे और कोई चीज न मिली, जो यह लोहे का चिमटा उठा लाया?'

हामिद ने अपराधी-भाव से कहा—तुम्हारी उँगलियाँ तवे से जल जाती थीं, इसलिए मैंने इसे लिया।

बुढ़िया का क्रोध तुरन्त स्नेह में बदल गया, और स्नेह भी वह नहीं, जो प्रगल्भ होता है और अपनी सारी कसक शब्दों में बिखेर देता है। यह मूक स्नेह था, खूब ठोस, रस और स्वाद से भरा हुआ। बच्चे में कितना व्याग, कितना सदभाव और कितना विवेक है! दूसरों को खिलौने लेते और मिठाई खाते देखकर इसका मन कितना ललचाया होगा? इतना जब्त इससे हुआ कैसे? वहाँ भी इसे अपनी बुढ़िया दादी की याद बनी रही। अमीना का मन गदगद हो गया।

और अब एक बड़ी विचित्र बात हुई, हामिद के इस चिमटे से भी विचित्र। बच्चे हामिद ने बूढ़े हामिद का पार्ट खेला था। बुढ़िया अमीना बालिका अमीना बन गई। वह रोने लगी। दामन फैलाकर हामिद को दुआएं देती जाती थी और आँसू की बड़ी-बड़ी बूंदे गिराती जाती थी। हामिद इसका रहस्य क्या समझता!

लेख

# शकुंतला देवी

साभार: शिखर भारतीय महिलाएं

अत्यंत प्रतिभावान गणितज्ञ शकुन्तला देवी का जन्म 04 नवम्बर, 1939 को बंगलौर में एक सुविख्यात ब्राहमण परिवार में हुआ था। उनके पिता एक सर्कस में झूला-कलाबाज़ और तनी रस्सी पर नट का खेल दिखाने वाले के रूप में काम करते थे। बाद में मानव तोपगोला बनकर निकलने का तमाशा दिखाने लगे थे। उन्होंने ही ताश-पत्तों की बाजीगरी के जरिए शकुन्तला को गणितज्ञ की दुनिया से परिचित कराया। वे जान गए कि उनकी पुत्री की स्मरण शक्ति अद्भुत है। तीन वर्ष की कोमल आयु में ही यह बच्ची संख्याओं अर्थात अंकों में असाधाराण रूचि लेने लगी थी। शकुन्तला देवी पलक झपकते ही किसी भी संख्या की गणना करने का हुनर जानती हैं।

शकुन्तला की गणन-प्रतिभा उस समय सामने आई, जब वे तीन वर्ष की आयु में अपने पिता और उनके कुछ दोस्तों के साथ पत्तों की चालबाजी कर रहीं थीं। वे बताते हैं कि शकुन्तला ने हाथ की सफाई के बजाए सभी पत्तों को याद करके उन्हें हरा दिया। शकुन्तला ने गणित में आरंभिक शिक्षा अपने दादा से ग्रहण की। वे पांच साल की आयु में ही जटिल मानसिक अंकगणित में निपुण हो गई थीं।

पांच साल की होने तक शकुन्तला को एक विलक्षण बच्चा और जटिल मानसिक अंक गणित में निपुण माना जाने लगा था। एक वर्ष बाद शकुन्तला ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन मैसूर विश्वविद्यालय में बड़ी संख्या में उपस्थित छात्रों एवं प्रोफेसरों के सामने किया। आठ साल की उम्र में अपना यही कमाल अन्नामलाई विश्वविद्यालय में दिखाया। शकुन्तला की असाधारण योग्यता एवं प्रतिभा के सार्वजानिक प्रदर्शन दुनिया भर में भिन्न-भिन्न संस्थाओं में होने लगे, जिन्हें देखकर वहां मौजूद सभी विद्यार्थी और शिक्षक चकित रह जाते थे। उनके प्रदर्शन में बहुधा ट्रूमैन हेनरी सेफोर्ड जैसे दुसरे प्रतिभावान लोग भी मौजूद रहते थे। वे जटिल परिकलन-प्रक्रिया और वैदिक गणित के साथ-साथ जोड़, गुणा, भाग, वर्ग और घनमूल निकालने जैसे सभी सवालों के जवाब क्षणभर में प्रस्तुत कर देती थीं। पिछली शताब्दी में किसी भी सप्ताह के किसी भी दिन की तारीख वे कुछ पल में ही बता सकती थीं। शकुन्तला देवी उस समय के कुछ तीव्रतम कम्प्यूटरों से भी बढ़कर थीं।

गणित के क्षेत्र में अद्भुत प्रतिभासंपन्न महिला शकुन्तला देवी को अनेक देशों ने आमंत्रित किया। जनवरी 1977 में शकुन्तला देवी ने उलास, टेक्सास में स्थित 'सदर्न मैथोडिस्ट यूनिवर्सिटी' में 201 अंकों की संख्या का 23वां मूल पचास सेकंड में निकाल दिया, जिसका सही उत्तर '546372891' था। उन्होंने उस समय के तीव्रतम कंप्यूटर 'यूनिलैक' को भी पछाड़ दिया, जिसने 62 सेकंड का समय लिया और 13,000 अनुदेशों का सहारा लिया। 18 जून, 1980 को शकुंतला देवी ने इम्पीरियल कॉलेज, लंदन के कंप्यूटर विभाग द्वारा यों ही चुनी गई 13 अंकों की दो संख्याओं '7,686,369,778,870x2,465,099,745,779' का गुणनफल सिर्फ 28 सेकंड में निकाल दिया। इस घटना का उल्लेख सन 1995 की 'गिनीज़ बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकार्ड्स' के पृष्ठ 26 पर है। शकुन्तला ने 332812557 का घनमूल एक मिनट से भी कम समय में निकाल दिया।

आज शकुन्तला देवी एक अत्यंत कुशल गणितज्ञ के रूप में प्रसिद्द हैं। उनकी रुचियों में फलित ज्योतिष का रहस्यपूर्ण विषय भी शामिल है। भविष्य में वे 'गणितज्ञ अनुसंधान केंद्र' स्थापित करना चाहती हैं। उन्होंने कई किताबें भी लिखी हैं, जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं —— 'पजल्स टू पजल यू', 'फेन विद नंबर्स', 'एस्ट्रोलॉजी फॉर यू' और 'मैथ एबिलिटी'।

शकुन्तला देवी को आमतौर पर 'मानव कंप्यूटर' कहा जाता है, क्योंकि वे किसी भी यांत्रिक सहायता के बिना जटिल-से-जटिल गणितीय समस्याओं को हल करने की अद्भुत क्षमता रखती हैं। कम्प्यूटरों के युग में शकुंतला देवी एक ऐसी प्रतिभा हैं, जो कभी कंप्यूटर का इस्तेमाल नहीं करती। उनके अनुसार, "किसी भी बच्चे को यूनिवर्सिटी पहुंचने तक कंप्यूटर नहीं दिया जाना चाहिए, तब तक उसकी मानसिक क्षमताओं को विकसित होने देना चाहिए। " शकुन्तला देवी ने इंगित किया कि "आज के बच्चे उतने कुशाग्र बुद्धि नहीं हैं जितने 20 से 30 साल पहले हुआ करते थे।"

"मानसिक तत्परता में इस कमी के लिए बहुत हद तक टेक्नोलॉजी जिम्मेदार है," उन्होंने कहा।

उनका यह भी कहना है, "अगर आप किसी मांसपेशी या शरीर के किसी भाग का उपयोग नहीं करते हैं, तो वह क्षीण होने लगता है। मस्तिष्क के साथ भी यही होता है। आप इसका जितना अधिक प्रयोग करते हैं, यह उतना ही बेहतर होता है।" शकुन्तला देवी को यह पता नहीं है कि उनका जन्म किस वर्ष में हुआ, लेकिन वे 10वीं कक्षा पास न करने के बावजूद घनमूल का सवाल अपने दिमाग में ही हल कर लेती हैं। "मेरे जैसा दिमाग करोड़ों में किसी एक के पास होता है, लेकिन बच्चों को पढने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। " शकुन्तला देवी का कहना है।

बच्चों को गणित से डर लगता है? "इसका करण यह है कि गणित को एक कठिन विषय के रूप में देखा जाता है।" वह कहती हैं, "गणित जीवन है, हर चीज़ में गणित होता है, जन्म से लेकर खाने में जो आप खाते हैं और जिस हवा में आप साँस लेते हैं, उसमें भी गणित होता है।" शकुन्तला देवी यह भी कहती हैं कि बच्चों को गणित की शिक्षा छह साल की उम्र से दी जानी चाहिए।

आज शकुन्तला देवी को एक अत्यंत कुशल गणितज्ञ माना जाता है और मानव-बुद्धि के सामान्य सिद्धांतों को चुनौती देने की उनकी योग्यताएँ खोज का विषय रही हैं। उन्होंने अपनी अद्भुत प्रतिभा से विश्व को चुनौती दी है।

गणित की कुछ विलक्षण प्रतिभाओं की तुलना में शकुन्तला देवी एक सामान्य सुसंतुलित महिला हैं। वे देश-विदेश में लगातार दौरों पर जाती रहती हैं और अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करती हैं तथा लोगों को प्रोत्साहित करती हैं कि वे अपनी सामर्थ्य क्षमताओं का विकास करें, जो हर व्यक्ति के अन्दर छिपी रहती हैं। वह हमारे समय की एक सच्ची वीरांगना हैं। उन्होंने गणित के सवालों को विश्व में बढ़िया-से- बढ़िया कम्प्यूटरों से भी ज्यादा तेज़ी से हल करने में अपनी श्रेष्ठता का परिचय दिया है और नाम कमाया है।

उन्होंने 'ह्यूमेन कम्प्यूटर' कहलाना पसंद नहीं है। उनकी पक्के धारणा है कि व्यक्ति का दिमाग किसी भी कम्प्यूटर से श्रेष्ठ होता है। मानव-मन की सीखने की क्षमता का पता लगाने और उसका विस्तार करने में उनकी गहरी रूचि का ही परिणाम था कि उन्होंने स्मरण शक्ति संबंधी गति-बिलां (माइंड डाइनामिक्स) की संकल्पना का प्रतिपादन किया।

अंकों से उनका अगाध प्रेम उनके लिए विश्व-भ्रमण का सबब बना। वे दुनिया भर में छात्रो समुदाय, राष्ट्रपतियों, राजनीतिज्ञों, प्रधानमंत्रियों, शिक्षाविदों आदि के लिए अपनी अद्भुत प्रतिभा का प्रदर्शन करती रही ह। अपनी विशिष्ट प्रतिभा का प्रदर्शन करने के साथ-साथ वे युवाओं को गणित के संसार को जानने-समझने के लिए भी प्रोत्साहित करती हैं। 'वैदिक मैथ फोरम इंडिया' शकुन्तला देवी से जुड़ा है।

## लेख: अनुशासन (Discipline)

जीवन में अनुशासन का अत्यधिक महत्व है। हमें शत-प्रतिशत अनुशासित रहना चाहिए। अनुशासन शब्द बना ही इस तरीके से है कि अँग्रेज़ी में इस शब्द के अक्षरों को क्रम संख्या में लिख कर जोड़ें तो इनका योग भी 100 होता है यानि की शत-प्रतिशत :-

| | | |
|---|---|---|
| **D** | **-** | **04** |
| **I** | **-** | **09** |
| **S** | **-** | **19** |
| **C** | **-** | **03** |
| **I** | **-** | **09** |
| **P** | **-** | **16** |
| **L** | **-** | **12** |
| **I** | **-** | **09** |
| **N** | **-** | **14** |
| **E** | **-** | **05** |
| **Total** | **-** | **100** |

लेख

# भारत की आजादी के आंदोलन में हिंदी की भूमिका

**साभार: राजभाषा भारती**

"हम भारत के लोग" संविधान की प्रस्तावना में हिंदी में अंकित इस पुरोवाक तक देश को और हिंदी को पहुंचाने के लिए कितने ही वीर सपूतों ने स्वतन्त्रता-यज्ञ में प्राणों की आहुतियॉ दी हैं। मध्य प्रांत में जहां बिस्मिल और अशफाक के हिन्दुस्तानी भाषा के नगमे गूंज रहे थे, तो पंजाब में इंकलाब जिंदाबाद की अग्नि प्रज्ज्वलित थी।

महाराष्ट्र में तिलक "स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार" का उद्घघोष कर रहे थे तो चंपारण से लेकर साबरमती तक गांधी के करो या मरो का शंखघोष सुनाई दे रहा था। उधर नेता जी "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा" कहकर देश के युवाओं के रक्त को आलोडित कर रहे थे तो चंद्रशेखर आजाद अपनी मूँछों पर ताव देकर ठेठ हिंदी में अंग्रेजो को चुनौती दे रहे थे कि "दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे, आजाद ही रहे हैं, आजाद ही रहेंगे"।

1857 की मेरठ क्रांति से 1947 तक के इस नब्बे वर्ष के घोरतम स्वतन्त्रता संग्राम में हिंदी ने आजादी के दीवानों के देश प्रेम को मुखर किया साथ ही करोड़ों जनों को यह भी लगा कि राष्ट्रीय गौरव के बिना, स्वराज के बिना जीवन व्यर्थ है। इसी राष्ट्रीय जागरण की भावना ने हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाइ को अपने क्षुद्र और परंपरागत धार्मिक मतभेदों को भुलाकर राष्ट्रनायकों के भाव और भाषा दोनों का अनुकरण कर अटल एकता का परिचय दिया।

## आजादी के आंदोलन में हिंदी – अस्मिता

किसी भी आजादी के आंदोलन या क्रांति को उसकी सफल परिणति तब तक संभव नहीं है जब तक कि लोक मानस या जन चेतना का अभूतपूर्व जागरण न हो, और यह जागरण तब तक संभव नहीं है जब तक कि कोई एक व्यापक भाषा विचारों का संवाहक न बने।

भारतीय आंदोलन में शताब्दियों से दबी– कुचली अस्मिता को स्वर देने का कार्य प्रबल रूप से हिंदी या कहें हिन्दुस्तानी भाषा ने किया।

1924 में बेलगांव के अधिवेशन में जब कुछ वक्ता भारत की स्वतन्त्रता की बात अंग्रेजी भाषा में कर रहे थे तब गांधी जी ने क्षुब्ध होकर भरी सभा में कहा, "यह कितने दुख की बात है कि हम स्वराज की बात भी अंग्रेजी में करते हैं"।

हिंदी जिसे उस समय हिन्दुस्तानी भाषा भी कहा जाता था जिसमें कि न तो संस्कृत के क्लिष्ट शब्द थे न ही फारसी/उर्दू के न समझ में आने वाले लफ़्ज। बल्कि दोनों भाषाओं के उन शब्दों का समावेश हुआ हो जनसाधाण की जुबान पर पहले से थे। इसके साथ ही इस हिन्दुस्तानी भाषा में प्रांत – प्रांत के अपने विशेष शब्द शामिल होते गए और हिंदी भाषा का सागर विस्तृत होता गया। कई अंग्रेजी के शब्द जैसे कोर्ट, रेल, टेलिग्राम, पुलिस आदि भी हिंदी में रच-बस गए।

## आजादी की लड़ाई और भारतेन्दु का हिंदी युग:

भारतेन्दु के वृहत हिंदी साहित्यिक योगदान के कारण ही 1857 से 1900 तक के काल को भारतेन्दु युग के नाम से जाना जाता है।

भारतेन्दु के समय में राजकाज और संभ्रांत वर्ग की भाषा फारसी थी। वहीं, अंग्रेजी का वर्चस्व भी बढ़ता जा रहा था। केवल भाषा ही नहीं, साहित्य में उन्होंने नवीन आधुनिक चेतना का समावेश किया और साहित्य को 'जन' से जोड़ा।

1882 में शिक्षा आयोग (हन्टर कमीशन) के समक्ष अपनी गवाही में हिंदी को न्यायालयों की भाषा बनाने की महत्ता पर उन्होंने कहा था- "सभी सभ्य देशों की अदालतों में उनके नागरिकों की बोली और लिपि का प्रयोग किया जाता है। यही (भारत) ऐसा देश है जहां अदालती भाषा न तो शासकों की मातृभाषा है और न प्रजा की। यदि आप दो सार्वजनिक नोटिस, एक उर्दू में, तथा एक हिंदी में, लिखकर भेज दें तो आपको आसानी से मालूम हो जाएगा कि प्रत्येक नोटिस को समझने वाले लोगों का अनुपात क्या है।"

## आजादी की लड़ाई, गांधी – युग और हिंदी :-

गांधी की मातृभाषा गुजराती थी, उनके
पेशे(वकालत) की भाषा अंग्रेजी थी। लेकिन जब वे पहली बार स्वतंत्रता आंदोलन में कूदे तो सम्पूर्ण भारत वर्ष के भ्रमण के दौरान उन्हें आभास हुआ कि हिंदी अधिसंख्य जनता द्वारा बोली जाती है तथा इसकी संप्रेषणीयता अपार है। जब तक नेतागण इस भाषा का संपर्क भाषा के रूप में प्रयोग नहीं करेंगे । आम भारतीय कभी सीधे – सीधे स्वतंत्रता आंदोलन से नहीं जुड़ पाएगा। फलत: गांधी जी ने हिंदी में भी दो अखबार निकाले – नवजीवन और हरिजन सेवक। अपने ज्यादातर पत्रों का जवाब भी गांधी जी हिंदी में ही देना पसंद करते थे।

भारत लौटने के कुछ ही वक्त बाद 1918 में महात्मा गांधी ने इंदौर के हिंदी साहित्य सम्मेलन में कहा था, "जैसे ब्रिटिश अंग्रेजी में बोलते हैं और सारे कामों में अंग्रेजी का ही प्रयोग करते हैं, वैसे ही मैं सभी से प्रार्थना करता हूं कि हिंदी को राष्ट्रीय भाषा का सम्मान अदा करें। इसे राष्ट्रीय भाषा बनाकर हमें अपने कर्तव्य को निभाना चाहिए।"

वे मानते थे कि भारतीयता, राष्ट्रीयता, स्थानीयता गौरव के बोध के लिए अपनी भाषा में शिक्षा आवश्यक है। वे एक बारगी तो अंग्रेजी से खिन्न होकर इतना तक कह दिया था कि "यदि मेरे पास शासन की एकमुखी शक्ति (तानाशाही) होती, तो आज, अपने छात्र छात्राओं की परदेशी माध्यम द्वारा होती शिक्षा, रूकवा देता।"

तत्कालीन भारतीय राजनेताओं में गांधीजी पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने दक्षिण भारत में राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने के लिए हिंदी का विधिवत सिखाया जाना आवश्यक समझा और इसके लिए उन्होंने ठोस योजना प्रस्तुत की, जिसके अंतर्गत पुरूषोत्तम दास टंडन, वेंकटेश नारायण तिवारी, शिव प्रसाद गुप्ता सरीखे हिंदी – सेवियों को लेकर दक्षिण भारत हिन्द प्रचार सभा का गठन किया।

गांधी जी ने 20 अक्टूबर 1917 ई. को गुजरात के द्वितीय शिक्षा सम्मेलन में दिए गए अपने भाषण में राष्ट्रभाषा के कुछ विशेष लक्षण बताए थे, वे निम्न हैं

1. वह भाषा सरकारी नौकरों के लिए आसान होनी चाहिए।
2. उस भाषा के द्वारा भारत का आपसी धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक कामकाज शक्य होना चाहिए।
3. उस भाषा को भारत के ज्यादातर लोग बोलते हों।
4. वह भाषा राष्ट्र के लिए आसान होनी चाहिए।
5. उस भाषा का विचार करते समय क्षणिक या अस्थायी स्थिति पर जोर न दिया जाये।

अंग्रेजी भाषा में इनमें से एक भी लक्षण नहीं है, यह माने बिना काम चल नहीं सकता, हिंदी भाषा में ये लक्षण मौजूद हैं। हिंदी भाषा मैं उसे कहता जिसे उत्तर में हिन्दू और मुसलमान बोलते हैं और देवनागरी या फारसी में लिखते हैं।

## आजादी की लड़ाई और हिंदी पत्रकारिता

खींचो न कमानों को न तलवार निकालो जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो–अकबर इलाहाबादी

हिंदी पत्रकारिता स्वतंत्रता-आन्दोलन के समय जागरण और क्रांति की उज्वल मशाल लेकर चला करती थी। 1857 में ही निकले **पयामे आजादी** ने आजादी की पहली जंग को नई धार दी।

स्वतन्त्रता आन्दोलन को तीव्र करने में कानपुर के प्रताप कार्यालय का योगदान अतुलनीय है, गणेश शंकर विद्यार्थी मात्र स्वतंत्रता संग्राम सेनानी ही नहीं अपितु एक महान पत्रकार भी थे। वह नवयुवकों को आश्रय देकर, प्रशिक्षण देकर उन्हें राष्ट्रहित में सर्वस्व गवां देने के निमित्त जोश भरते थे।

कर्मवीर, स्वदेश, प्रताप एवं सैनिक जैसी पत्रिकाओं ने मिलकर अंग्रजों के नाक में दम कर रखा था। जिसके सूत्रधार विधार्थी जी ही थे। इसी समय मदन मोहन मालवीय ने 1907 में 'अभ्युदय' का प्रकाशन कर उत्तर प्रदेश में जन जाग्रति का बिगुल बजा दिया।

कर्मवीर पत्र ने स्वतन्त्रता के समय ओज एवं जोशपूर्ण शीर्षक 'राष्ट्रीय ज्वाला जगाइये' के साथ देश के युवाओं के हृदय में देश भक्ति का भाव भर दिया स्वतंत्रता संग्राम में 12 बार जेल की यात्रा करने वाले और 63 बार तलाशियां देने वाले माखन लाल चतुर्वेदी जी ने हिंदी पत्रकारिता को जुझारू व्यक्तित्व प्रदान किया।

इन हिंदी अखबारों से जुड़े पत्रकार प्रतिबंधित काल में भूमिगत होकर, हस्तलिखित या साइक्लोस्टाइल पत्र प्रकाशित कर क्रांति के दीपक को प्रज्वलित रखते थे। हिंदी इस दीपक में शब्द धृत बनकर अपना योगदान करती रही।

## आज़ादी की लड़ाई और हिंदी पद्य साहित्य

स्वतंत्रता, सुराज, समानता का जो सपना हमारे लेखकों, कवियों के मन में था उसे पं नरेंद्र शर्मा, केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन, नेपाली, माधव शुक्ल, गयाप्रसाद शुक्ल सनेही, सियारामशरण गुप्त व सोहनलाल द्विवेदी अपनी रचानाओं में रूपायित कर रहे थे। नवीन की रचनाएं ओज के प्रवाह को गति देने वाली थीं तो सुभद्राकुमारी चौहान की विख्यात कविता 'खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी' सैनिकों में जोश भरने वाली थी। झांसी की रानी के शौर्य का चित्रण ऐतिहासिक उपन्यासकार वृंदावन लाल वर्मा ने अपने उपन्यास में भी किया है। जयशंकर प्रसाद के नाटक चंद्रगुप्त व स्कंद गुप्त में देशप्रेम की अनुगूंजें हैं तो उनके काव्य में गुलामी की कारा को तोड़ने का आह्वान मिलता है। वे अमर्त्य वीर पुत्रों को दृढ़ प्रतिज्ञ होकर आगे बढ़ने का आह्वान कर रहे थे।

पं. माखन लाल चतुर्वेदी की "पुष्प की अभिलाषा" कविता हो या महाकवि जयशंकर प्रसाद द्वारा प्रस्तुत प्रयाण गीत (हिमाद्रि तुंगश्रृंग से, प्रबुद्ध शुद्ध भारती / स्वयंप्रभा समुंज्ज्वला, स्वतंत्रता पुकारती)।

जगदम्बा "हितैषी" की शहीदों की मजारों पे लगेंगे हर वर्ष मेले / वतन पे मरने वालों का यही बाकी निशॉं होगा-हो या श्यामलाल गुप्त 'पार्षद' का झंडा गीत ....विजयी विश्व तिरंगा प्यारा / झंडा ऊँचा रहे हमारा....- ये सभी हिंदी पद्य – रचनाएं देशभक्ति का बिगुल फंक रही थीं।

## आज़ादी की लड़ाई और हिंदी गद्य साहित्य

महावीर प्रसाद द्विवेदी, प्रेमचंद, अज्ञेय, जैनेन्द्र, मोहन राकेश आदि हिंदी लेखकों ने निबंध, कहानी, उपन्यास के द्वारा बुद्धिजीवी वर्ग के साथ – साथ समाज के हर तबके को स्वतन्त्रता के बारे में कभी खुलकर तो कभी संकेतों में बताया।

रूस की 1917 की बोल्शेविक क्रांति ने दुनिया के लेखकों में एक नई तरह की प्रगतिशीलता का जज्बा पैदा किया था। प्रेमचंद इसी चेतना का प्रतिनिधित्व करते थे। उन्होंने कहानियों और उपन्यासों के माध्यम में जहां भारत के सामंतवाद और ब्रिटिश नौकरशाही की आलोचना की वहीं गुलामी व ब्रिटिश शोषण के अनेक रूपों को उजागर किया।

उपेंद्र नाथ 'अश्क', यशपाल व भगवती चरण वर्मा के कथा साहित्य में भी स्वाधीनता की आंच दिखती है। धनपत राय का लिखा सोजेवतन तो अंग्रेजी शासन में जब्त हुआ। चांद का फांसी अंक भी जब्ती का शिकार हुआ। उन जैसे लेखकों पर अंग्रेजों की निगाह रहती थी। इसलिए इस खुफियागिरी से आजिज आकर धनपत राय ने प्रेमचंद नाम से लिखना आरंभ किया तथा बाद में इसी नाम से प्रसिद्ध हुए।

अंग्रेज जब तक इन बगावती कहानियों या उपन्यासों पर प्रतिबंध लगाते तब तक लाखों लोग इसे छुप – छुपाकर पढ़ चुके होते थे और हिंदी भाषा इस तरह पंजाब से लेकर महाराष्ट्र (तत्कालीन मुंबई) एवं राजकोट से लेकर बिहार तक मनोरंजक साहित्य के जरिये की चेतना को जगाने के कार्य में अहर्निश लगी हुई थी।

## आज़ादी की लड़ाई और हिंदी के नारे

कहा जाता है कि हर क्रांति के एक या एक से अधिक सूत्र-वाक्य (स्लोगंस) वेद ऋचाओ की तरह अभिमंत्रित होते हैं जो जन जागरण का पांचजन्य फूंकने में सहायता करते हैं।

गांधी जी ने जहां **'अंग्रेजो भारत छोड़ो'** के सुविख्यात नारे दिये तो वहीं सुभाष ने आजाद हिन्द फौज में **जय हिन्द** को अभिवादन वाक्य बना दिया। लाला लाजपत राय ने युसुफ मेहर अली का सुझाया नारा 'साइमन कमीशन वापस जाओ' कहकर फिरंगियों को ललकारा तो भगत सिंह ने 'इंकलाब जिंदबाद' के नारे से क्रांति को अमर करने का सूत्रवाक्य दिया।

इस प्रकार से देखते हैं कि हिंदी भाषा के नारों (वंदे मातरम, स्वराज हमारा...., आराम हराम है आदि) ने एक ओर ब्रिटिश की ताबूत में कील ठोंकने का काम किया वहीं दूसरी ओर पूरे देश को एक सूत्र में जोड़ कर रखा। ये मंत्र धार्मिक और मजहबी मंत्रों से अधिक लोकप्रिय हुए एवं लोगों की अटूट आस्था के शब्द – ध्रुव तारे बनकर उभरे।

## निष्कर्ष

हिंदी भाषा ने समग्र राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संघर्ष में अपना अभूतपूर्व प्रभाव छोड़ा। उस समय संचार के साधन अत्यंत सीमित थे लेकिन भावों का भाषा के द्वारा विनिमय ने अंग्रेजो के तार और टेलिफोन को भी पीछे कर दिया। अगर उस समय हिंदी उठ खड़ी नहीं होती, प्रबल रूप से जनचेतना का माध्यम न बनती, तो हो सकता था भारत वर्ष के आजाद होने में कुछ और दशक लग जाते।

हिंदी को कोई राज्य-प्रश्रय भी नहीं मिला था किन्तु जनता की गोद में पलकर यह सही अर्थों में देश के गौरव के साथ मुखर हुई और जनता-जनार्दन की आवाज बनकर उभरी।

लेख

# काऊ नृप होई हमें का हानि

चुनाव के समय उपेक्षित से उपेक्षित व्यक्ति भी आम से खास बन जाता है। प्रत्येक उम्मीदवार में उसे ईश्वर का अंश दिखाई देने लगता है। दोनों के बीच ईश्वर जीव अंश अविनाशी का सम्बन्ध स्थापित होने लगता है। ग्राम पंचायत स्तर के चुनाव का तो कहना ही क्या ? चुनाव प्रचार के दौरान प्रत्येक उम्मीदवार फौरी तौर पर अपने समर्थकों के लिये शराब और धन का दान इस प्रकार करता है मानो चुनाव आयोग का उसके लिये ऐसा करने का विशेष आदेश हो। पंचायत विधेयक में बाकायदा कमजोर वर्ग और महिलाओं के लिये सुरक्षित सीटों का भी प्रावधान किया गया है। इसके लिये किसी प्रकार की शैक्षिक योग्यता की भी जरूरत नहीं।

लोग चाहे इसके पक्ष में कितने ही फायदे गिनवाये लेकिन ग्राम पंचायत चुनावों के कुछ कुप्रभाव भी है जिनसे गांव वालों में हिंसा और वैमनस्य की भावना को बल मिला है। जिन गांवों में लोग परस्पर मिलजुल कर रहते थे आज वहां एक -एक गांव में लोग कई गुटों में बटे हुए हैं। इसके कारण यहां हिंसा, बलात्कार, लूटपाट ,झगड़े , नारी शोषण और प्रतिहिंसा के मामलों में अप्रत्याशित बढ़ोतरी हो गई है। जिन लोगों में भाई चारा रग-रग में भरा था वे ही एक दूसरे के रक्त पिपासु हो रहे हैं। मैंने कई चुनाव देखे और उन्हीं घटनाओं ने मुझे यह कहानी लिखने को बाध्य कर दिया।

जयगढ़ ग्राम पंचायत में कुल चार गांव आते हैं। ये हैं जयगढ़ , नवलपुरा,शेरपुर और सुमेंरपुर। इनमें सबसे बड़ा गांव जयगढ़ है सो हमेंशा से सरपंच पद इसी गांव के पास रहा है। इस बार चुनाव मैदान में मुख्य प्रतिद्वंदी के रुप में जयगढ़ की राजन्ती और सुमेंरपुर की शकुन्तला ही मुख्य उम्मीदवार थीं। इससे पहले राजन्ती दो पंचायतों की सदस्य भी रह चुकी है। दोनों ही उम्मीदवार धनबल में एक से बढ़कर एक हैं।

राजन्ती उम्र के पचासवें पड़ाव को पार चुकी थी और शकुन्तला एक अधेड़ आयु महिला थी। शकुन्तला कई बार इस चुनाव को हार चुकी थी परन्तु इस बार उसने साम, दाम, दंड़, भेद से इसे जीतने की ठान ली थी। यही रणनीति अपनाकर वो अपना चुनाव प्रचार कर रही थी।

असल में हुआ यूं कि इस बार राजन्ती चुनाव नहीं लड़ना चाहती थी। राजन्ती का ससुर धन सिंह जो कि भूतपूर्व सरपंच था, ने इस बार चुनाव लड़ने से इंकार कर दिया था। इसी समय कौशल्या के पति हरिराम और उसके दोनों बेटे राम सिंह व जल सिंह वहां पहुंचे। उन्होंने धन सिंह से कहा कि इस बार हम चुनाव लड़ना चाहते है, हमारी मदद करो। धन सिंह ने सहर्ष कह दिया कि मेरा सपोर्ट तुम्हारे साथ है तुम चुनाव लड़ो। सभी खुश थे कि चलो इस बार गांव से कोई और उम्मीदवार नहीं है सो हम आसानी से जीत जांएगे।

वे खुशी खुशी प्रचार में लग गये। कई बार कहने पर भी धन सिंह उनके साथ प्रचार करने नहीं गये तो एक दिन राम सिंह व जल सिंह तथा उनके कुछ समर्थक स्थिति जानने धन सिंह के पास पहुंचे। उन्होंने कहा कि सरपंच आप हमारे साथ प्रचार करने क्यों नहीं चल रहे हो? धन सिंह ने ज़वाब दिया कि मेरा वोट और सपोर्ट तुम्हारे साथ है लेकिन मैं किसी के आगे हाथ जोड़ने कहीं नहीं जाऊंगा। यह सुनते ही राम सिंह नाराज़ हो गया। उसने आव देखा ना ताव और तैश में आकर कह दिया - " तुम्हारे सपोर्ट को अपने पास रखो, हमें जरूरत नहीं है इसकी। और कान खोलकर सुनलो अब तुम भी मैदान में आ जाओ, तुम्हें भी पता लग जायेगा।" कहकर वे चले गये। प्रतिष्ठा का सवाल मानकर धन सिंह ने अपनी पुत्रवधू राजन्ती को भी चुनाव मैदान में उतार दिया। अब इसी गांव से धीरे धीरे कई उम्मीदवार मैदान में आ चुके थे सो वोटों का बिखराव तो होना ही था।

जयगढ़ का कुन्जी लाल मास्टर बड़ा ही धूर्त और कामुक प्रवृति का व्यक्ति था। अपनी इन्हीं हरक़तों की वजह से वह पहले से ही बदनाम था। उसने एक बार पास के गांव नवलपुरा की नई ब्याहता मुनिया को देख लिया था। उसी समय से वह उस पर लट्टू हो गया था। उसे वह पाने के सपने मन ही मन देखने लगा पर उसे कुछ सूझ नहीं रहा था। मुनिया दो साल पहले ही शादी होकर नवलपुरा में आई थी। बड़ी बड़ी कजरारी आंखें, गोल और उन्नत ललाट, गुलाब से सुर्ख होंठ और गदराई देह से उसका सौंदर्य कंचन- सा दमकता था। उसका पति रामप्रसाद निहायत सीधा- साधा अनपढ़ किसान था। कुन्जीलाल गांव में ब्याज पर पैसे भी देता था। एक बार उसने मुनिया के पति को भी पैसे दिये थे सो वे लोग उसका अहसान भी मानते थे।

कुन्जी सरकारी सेवा से निवृत्त हो चुका था परन्तु उसका कामी मन अभी सेवानिवृत नहीं हुआ था। कन्जूस व्यक्ति को जैसे धन और कामी को जैसे नारी ही प्यारी लगती है कुछ यही स्थिति कुन्जी मास्टर की भी थी। इस चुनाव में वह न तो राजन्ती के साथ था और न ही शकुन्तला के खेमें में, उसके दिमाग में कुछ और ही चल रहा था। चुनाव होने में अभी एक सप्ताह का समय था। एक दिन सुबह-सुबह वो मुनिया के घर जा पहुंचा। वहां उसका पति रामप्रसाद भी था। राम राम करने के बाद कुन्जी खाट पर बैठ गया और कुछ गम्भीर-सी मुद्रा बना ली। उसे देखकर रामप्रसाद ने पूछा-"क्या बात है मास्टरजी कुछ चिंता में दिखाई दे रहे हो।''

" यार रामप्रसाद मुझे चिंता इस चुनाव की हो रही है। मैंने काफ़ी दिनों से लोगों से चुनाव के सम्बन्ध में राय ली है। इस बार तो मामला गड़बड़ लग रहा है। यह दोनों ही उम्मीदवार ठीक नहीं है। लोग बाग मुझसे आकर कह रहे हैं अपना कोई उम्मीदवार खड़ा कर दो सारे वोट उसी को दे देंगे।" कुन्जी ने सर पर हाथ फेरते हुए कहा।

''तो फिर इसमें देर किस बात की है मास्टरनी को खड़ा कर दो। हम सब जी जान लगा देंगे।" रामप्रसाद ने खुश होते हुए कहा।

''अरे यार तुम तो जानते ही हो कि मेरा एक लड़का हमेशा बीमार रहता है उसे ही संभालने से फुर्सत नहीं मिलती मास्टरनी को।"

" तो फिर किसी और को खड़ा कर दो।" पास ही बैठे भजनी ने कहा।

''इसीलिये तो तुम्हारे पास आया हूं, मुझे कोई ऐसा उम्मीदवार चाहिये जो नौजवान हो, होशियार भी हो क्योंकि यह सीट महिलाओं के लिये है सो सहज ही योग्य महिला मिलना इतना आसान नहीं है। मैंने इस पर काफ़ी विचार किया और इस नतीजे पर पहुंचा कि मुनिया इसके लिये योग्य है। इन लोगों पर अभी कोई ज़्यादा बाल बच्चों की भी जिम्मेदारी नहीं है।" कहकर कुन्जी ने रामप्रसाद की ओर देखा। रामप्रसाद ने हुक्के को जोर से गुड़गुड़ाया और कहा-" अरे मास्टरजी हमारी कहां हैसियत है चुनाव लड़ने की।''

"तुम सारी जिम्मेदारी मुझपर छोड़ दो। हमें इसमें ज़्यादा पैसे की भी जरूरत नहीं है। वोट आजकल पैसे से नहीं मिलते व्यवहार से मिलते है। मैंने पूरा हिसाब लगा रखा है तकरीबन 1200 वोट तो मेरे निजी मान कर चलो। तुम्हारे जैसा इमानदार और नेक नियत उम्मीदवार खड़ा होने पर 500 वोट तो वैसे ही बढ़ जायेगे, जबकि हार जीत तो 1000 वोट पर ही हो लेगी।" चतुर राजनीतिज्ञ की भांति कुन्जी ने पासा फेंका। चूल्हे पर काम करती मुनिया ने जब यह बातें सुनी तो वो भी घूंघट निकाले उधर ही आ गई।

" नहीं हमें चुनाव नहीं लड़ना।" मुनिया ने घूंघट की ओट से कहा।

" देख मुनिया तुझे इस बात का अभी पता ही नहीं है कि इस बार कोरी सरपंची नहीं है। सरकार सरपंचों को विकास कार्यों के लिये 10 करोड़ रुपया देगी। इसमें ईमानदारी का 10 पेर्सेन्ट सरपंच का कमीशन होता ही है। जानती हो कितना कमीशन बनेगा। कुल मिलाकर एक करोड़ रुपये। पांच साल में करोड़पति बन जाओगी। सारी गरीबी भाग जायेगी।''

सारी बात सुनकर मुनिया और रामप्रसाद सन्न रह गये। उन्होंने तो कभी एक लाख रुपये भी इकट्टे नहीं देखे। थोड़ी देर मौन छाया रहा। पास में ही भजनी बैठा था सो राम प्रसाद खुलकर कुछ कह पाने की स्थिति में नहीं था और यही स्थिति मुनिया की थी। कुन्जी ने स्थिति को भांपते हुए कहा-" भजनी तुम घर चलो मैं तुम्हारे ही पास आ रहा हूं, तुमसे भी इस सम्बन्ध में कुछ बातें करनी है।" सुनकर भजनी अपनी तिबारी की ओर चला गया।

कुन्जी की बात रामप्रसाद के गले तो उतर गई परन्तु मुनिया अभी ना नुकर ही कर रही थी।

"देख मुनिया मैं तुमसे दूर थोड़े ही हूं ,जी जान लगा दूंगा और तुम्हें जिताकर ही दम लूंगा।" कुन्जी ने मुनिया के सर पर हाथ रखकर कहा। भोले भाले दोनों कुन्जी की बातों में आ गये और चुनाव के लिये तैयार हो गये। वहीं बैठकर वो तीनों रणनीति तय करने लगे।

कुन्जीलाल ने कहा-" रामप्रसाद तुम सुमेंरपुर और शेरगढ़ में एक-एक घर में जाकर प्रचार करोगे। मुनिया और मैं बाकी दोनों गांवों में सारी महिलाओं से सम्पर्क करेंगे। कल सुबह से ही काम शुरू कर दो।" कुन्जी ने योजना को अंतिम रुप देते हुए कहा।

अगले दिन मुनिया और कुन्जी मुंह अंधेरे ही चुनाव प्रचार के लिये निकल पड़े। दिन भर उन्होंने प्रचार किया। कुन्जी जहां भी जाता मुनिया से पहले ही मतदाताओ के पैर पकड़कर मुनिया के पक्ष में वोट ड़ालने की अपील कर देता। एक ही दिन में उसने मुनिया के दिल में जगह बना ली। मुनिया सोचने लगी की वास्तव में कुन्जी मेरे लिये जी जान एक कर रहा है। कई बार रास्ते में चाय पानी का खर्चा भी कुन्जी ने ही उठाया। मुनिया को उसने बिलकुल पैसे देने ही नहीं दिये। जैसी कि आजकल के मतदाताओं की आदत बनी हुई है, उनके पास जो भी जाता है वो सभी से उसके पक्ष में वोट देने की हां करते है। दूसरे मुनिया के रुप लावण्य से भी थोड़ी देर के लिये हर व्यक्ति को आंख सेकने का जरिया मिल रहा था सो वे लोग प्रचार में उसके साथ भी हो लेते थे। मुनिया की इस प्रकार गलतफहमी बढ़ती ही जा रही थी । वो इस सबका श्रेय कुन्जी को दे रही थी। शाम को मुनिया और कुन्जी वापिस घर पहुचें।

एकांत पाकर कुन्जी ने कहा - 'देखा मुनिया, यह सारे लोगों से मैं तेरे पक्ष में कई दिन पहले से ही प्रचार कर रहा हूं, तभी तो सारे तेरे पास दोड़े चले आ रहे है।'

"यह तो सही बात है, तुम्हारे बिना हमें कौन जानता है।" मुनिया ने घूंघट की ओट से कहा।

" मुनिया अब थोड़े दिन बाद ही तुम सरपंच बन जाओगी। तुम्हें यह घूंघट नहीं करना चाहिए। खासकर मेरे सामने किस बात का घूंघट। मुझमें और तुझमें अब क्या दूरी।" कहते-कहते कुन्जी ने मुनिया का घूंघट अपने हाथों से हटा दिया। मुनिया के दमकता चेहरा और सुर्ख गालों ने कुन्जी के कामी मन को झकझोर कर रख दिया। कुन्जी ने कहा कि मैं दो घंटे बाद वापस आता हूँ जब तक राम प्रसाद भी आ जायेगा फिर आगे की तैयारी करते हैं। कहकर कुन्जी अपने गांव की ओर चल दिया।

रामप्रसाद के आते ही मुनिया ने सारे दिन का घटनाक्रम सुनाया। वो बार बार कुन्जी की तारीफ के पुल बांध रही थी। रामप्रसाद भी इससे काफ़ी खुश था। एक ही दिन में दोनों चुनाव के रंग में पूरी तरह रंग गये थे।

रात नौ बजे कुन्जी ब्यालू कर उनके पास आ गया। वे दोनों उसी की राह देख रहे थे। आते ही कुन्जी ने आगे की रणनीति का खुलासा किया -" चुनाव में जो सबसे ज़्यादा वोट इधर उधर होते हैं वो रात के समय के चुनाव प्रचार से ही होते हैं। रामप्रसाद आज रात तुम भजनी को लेकर सुमेरपुर में ही रहो और नज़र रखो की कौन-कौन उम्मीदवार वहां किन-किन से मिलता है। उसकी सारी खबर सुबह मुझे आकर दो ताकि हम उनका इलाज कर सकें।" सुनते ही रामप्रसाद बिना देर किये सुमेरपुर के लिये रवाना हो गया। उसके जाते ही मुनिया दूध का गिलास भर लाई और कुन्जी से कहने लगी -" मास्टरजी आज दिनभर तुमने बहुत दौड़ धूप की है। काफ़ी थक गये हो लो यह दूध पी लो।" कुन्जी ने एक ही सांस में दूध का गिलास खाली कर दिया। थोड़ी देर इधर-उधर की बातें होती रही फिर कुन्जी ने कहा-" मुनिया इसमें अब कोई शक नहीं कि तू सरपंच बनेगी। यह मेरी भी प्रतिष्ठा का सवाल है। तुम्हें भी अब थोड़ा बदलना पड़ेगा।"

" मैं कुछ समझी नहीं मास्टरजी।" मुनिया ने चूल्हे पर हाथ सेंकते हुए कहा।

"इस पद को पाने के लिये कुछ दान भी करना पड़ता है। मैं जी जान लगाकर तुझे जितवाकर ही दम लूंगा।

मुझे भी तो इसके बदले कुछ चाहिए।"

" बताओ मास्टरजी मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकती हूं?" मुनिया ने भोलेपन से कहा।

सुनते ही कुन्जी ने मुनिया को अपनी बांहों में दबोच लिया। एक पल तो मुनिया कुछ समझ ही नहीं पाई परन्तु दूसरे ही पल वह छटपटाते हुए बोली - " यह क्या करते हो मास्टरजी?"

"अब यह दूरी मिटा ही दो मुनिया, जब मैं सब कुछ तुम्हारे लिये कर रहा हूं तो इतनी तो मेहरबानी मुझपर भी कर दो।' 'कहकर कुन्जी ने मुनिया को पूरी तरह दबोच लिया। लाचार मुनिया की स्थिति सांप छछुन्दर जैसी थी। यदि मना करती है तो चुनाव हारने का ड़र और हाँ करती है तो इज्ज़त,,,,,,,। आख़िरकार वो विवश हो गई। कुन्जी ने उसकी इज्ज़त को तार-तार कर दिया।

"देख मुनिया राजनीति में यह सब चलता है, तभी तो तू आगे बढ़ेगी।" इस प्रकार की चिकनी चुपड़ी बात कर कुन्जी ने मुनिया का दिल साफ कर दिया। अब उसे भी कोई गिला शिकवा नहीं रहा था। अब तो आये दिन कुन्जी दिन में इधर उधर चुनाव प्रचार के बहाने जाता और जब भी मौका मिलता मुनिया के साथ रंगरलिया मनाता।

इधर जयगढ़ से एक चौथा उम्मीदवार भी मैदान में कूद पड़ा, वो भी कुन्जी के परिवार से ही था। यह थी सुरजन की बहू कल्याणी। सुरजन इस चक्कर में था कि कोई अन्य उम्मीदवार मेरे पास आयेगा और मुझे बैठने के लिये कहेगा तो अच्छी खासी रकम ले लूंगा। यह सारी चाल कुन्जी की ही थी। उसी ने इसे खड़ा किया था। कुन्जी प्रचार तो कल्याणी का करता था और मुनिया को झांसे में लेकर उसके साथ रंगरलिया मनाता था। सुरजन ने भी जोर शोर से चुनाव प्रचार शुरू कर दिया। गांव में शाम होते ही उम्मीदवार अपने अपने समर्थकों को दारु की नदियों में डुबो देते थे। इसी आस में जब दिन-भर प्रचार करने के बाद सुरजन के समर्थक उसके पास शराब के लिये आये तो सुरजन घर से गायब हो जाता। उन्होंने उसे सब जगह तलाश किया परन्तु वह कहीं नहीं मिला। समर्थकों ने सोचा शायद दूसरे गांव में चुनाव के लिये चले गये हों। ऐसा ही सोचकर उन्होंने उस दिन अपने पैसे से खरीदकर शराब पी ली। सुरजन जैसे ही शाम होती वो दूसरे उम्मीदवारों के घर जाकर बैठ जाता ताकि वहां उससे कोई शराब मांगने न आये। आख़िरकार उसके कई समर्थक उससे नाराज़ हो दूसरे खेमों में चले गये।

एक दिन मुनिया अपने पति के साथ शेरपुर में प्रचार करने जा रही थी। अचानक रास्ते में उनकी मुलाकात शेरपुर के ही चालीस वर्षीय चन्दू से हो गई। चन्दू से मुनिया के पति ने अपने पक्ष में वोट की अपील की। चन्दू ने कहा मुझे मुनिया से अकेले में चुनाव के सम्बन्ध में कुछ बात करनी है। मुनिया और चन्दू सड़क के दूसरी ओर चले गये। चन्दू भी कुन्जी की तरह लम्पट किस्म का आदमी था।

'मेरे पास 115 वोट हैं, वो सारे वोट मेरी मुट्ठी में हैं ,मैं जहां कहूंगा वही जायेंगे। तुम चाहो तो यह सारे वोट तुम्हें दिलवा सकता हूं।" घाघ चन्दू ने कहा।

"मैं ज़िंदगी भर यह अहसान नहीं भूलूगी। इस बार मैं बड़ी उम्मीद लेकर चुनाव लड़ रही हूं।" मुनिया ने याचक स्वर में कहा।

‘'देख मुनिया सीधी-सी बात है इस हाथ ले और उस हाथ दे। बस एक रात अपने साथ गुजार लेने दो। जी जान लगा दूंगा तेरे लिये। चुनाव में तो यह सब कुछ चलता है।"

चन्दू ने गिध्द दृष्टि ड़ालते हुए कहा।

"रात दस बजे के बाद मेरे घर आ जाना, रामप्रसाद उस समय दूसरे गांव प्रचार के लिये चला जायेगा। लेकिन देख ले विश्वासघात मत करना।" मुनिया ने नजरे झुकाते हुए कहा।

" कैसी बात करती हो मुनिया, मैं अपने इकलोते बेटे की कसम खाकर कहता हूं कभी तुमसे दूर नहीं जाऊंगा।" चन्दू ने चेहरे पर कुटिल मुस्कान बिखेरते हुए कहा।

फिर दोनों अपने-अपने रास्ते चले गये।

चन्दू का गांव मुनियां के गांव से एक कोस की दूरी पर था। आज चन्दू का दिल बल्लियो उछल रहा था। शाम होते ही उसने अपने ढोर जल्दी से घर के अंदर बांधे ब्यालू की और अपनी पिछोड़ी ओढकर घर से निकल पड़ा। शीतकाल की अंतिम अवस्था थी और बसंत के आने में अभी समय था।रात का सर्द धुधलका और ठंडी हवा ने मौसम में अज़ीब सनसनी फैला रखी थी। चन्दू सरसों के खेत से गुजरने वाली पगडंडी से सरपट चला जा रहा था। बीच बीच में उसे इक्के दुक्के लोग भी मिल जाते थे जो शायद चुनाव प्रचार के लिये जा रहे थे। मुनिया का घर गांव के आख़िरी छोर पर था। वहां पहुचने के लिये सारा गांव पार करना पड़ता था। चन्दू गांव में नहीं घुसा और खेतों से ही होकर गांव के आख़िरी छोर पर पहुंच गया। उस समय गांव में बिजली गुल थी सो सारा गांव अंधेरे के आगोश में सिमटा पड़ा था। दबे पांव चन्दू ने मुनिया की चोखट खड़काई। मुनिया चूल्हे पर बैठी थी।उसका पति प्रचार के लिये गया हुआ था। दरवाजा मुनिया ने ही खोला और चन्दू अंदर चूल्हे पर जाकर बैठ गया। मुनिया ने फिर उसे आगाह किया - "देख मैं अपनी इज्ज़त भी दाव पर लगा रही हूँ, तू अब भी सोचले कहीं धोखा दे दे।"

'’नहीं, कभी धोखा नहीं दूंगा। मैं इस अग्नि की सौगंध खाकर कहता हूं।" चन्दू ने अपनी सांसो को संयत करते हुए कहा। कहते कहते चन्दू मुनिया को बांहों में भरकर अंदर के कमरे में ले गया जहां घुप्फ अंधेरा था। यह लोग अभी बात ही कर रहे थे कि अचानक उसी वक़्त कुन्जी मास्टर भी अपनी हवस मिटाने वहां पहुंच गया। दरवाजा खुला रह गया था सो वो सीधे अंदर कमरे में घुस आया। उसे आया देखकर चन्दू के हाथ पैर फूलने लगे। अंधेरे में कुछ दिखाई नहीं दे रहा था, वह अंदाजे से ही बाहर निकलकर भागने की फिराक में था परन्तु अंधेरे में कुन्जी से जा टकराया। दोनों ही एक-दूसरे से भयभीत हो आक्रमण करने लगे। कुन्जी ने अपने पैर से जूती निकाली और चन्दू के सिर और पीठ पर तड़ातड़ मारने लगा। चन्दू भी कहां पीछे रहने वाला था उसने भी लात और घूंसे बरसाना शुरू कर दिया। दोनों लड़ते-लड़ते घर के बाहर आ गये, तभी अचानक बिजली आ गई। रास्ते में कुछ प्रचारी लोग भी आ जा रहे थे सो सभी ने यह तमाशा देखा। कुन्जी ने ललकारते हुए कहा-"क्यों बे हरामी तेरी हिम्मत कैसे हुई इसके घर में घुसने की?"

''तू कौन होता है इसका? मैं वोटो के चक्कर में कुछ बात करने आया था।" चन्दू ने हकलाते हुए कहा। शोर सुनकर काफ़ी लोग जमा हो गये। सभी पूछने लगे क्या बात है? परन्तु दोनों चुप थे। दोनों ही कुकर्मी थे सो क्या कहते? बात कुन्जी ने सभाली। कुछ नहीं मैं प्रचार के लिये रामप्रसाद को बुलाने आया था तो यह चोरी से इसके घर में घुसने की कोशिश कर रहा था। इसी बात पर तू तू मैं मैं हो गई। चन्दू वहां से खिसक लिया। इतने में मुनिया भी इधर आ गई। उसने आते ही कहा -" यहां क्या शोर शराबा मचा रखा है, मास्टरजी तुम्हें तो इस वक़्त सुमेंरपुर में होना चाहिए,वहां सभी विरोधी उम्मीदवार जुटे हुए है?"

" मैं वहीं जा रहा हूं, रामप्रसाद को बुलाने आया था।" कुन्जी ने बात सभालते हुए कहा।

इन चुनावों में उम्मीदवार अपने मतदाताओं को भावनात्मक रुप से भी ब्लैकमेल करने से नहीं चूकते। इसमें फिर चाहे उनकी कितनी भी किरकिरी क्यों न हो? इसका ज्वलन्त उदाहरण कौशल्या का पति हरिराम था। कौशल्या भी इस बार चुनाव मैदान में थी। हरिराम जीवन के आख़िरी वर्षों में आंखों की ज्योति से विहीन हो चुका था। उसने अब तक के जीवन काल में कई असफल चुनाव लड़े। हर बार उसे हार मिली तो उसने इनसे दूर रहना ही उचित समझा, मगर इस बार अपने दोनों बड़े बेटों के आगे उसकी एक न चली और चुनाव लड़ बैठे। इस गांव में दलित जाति के करीब पचास घर है सो उनके वोट भी काफ़ी तादाद में थे। हरिराम के दोनों बेटों ने रणनीति बनाई की पिताजी द्वारा एक भिखारी की भांति इनसे वोट मांगे जांए तो यह लोग जरूर पसीजेंगे और वोट हमें ही देगें। अगले दिन ऐसा ही किया, हरिराम ने लाख मना किया कि वे किसी के आगे झोली नहीं पसारेंगे मगर दोनों बेटे अपनी इज़्ज़त की दुहाई देने लगे। कहने लगे यह चुनाव हमारी प्रतिष्ठा का प्रश्न है। आख़िरकार मन मारकर हरिराम अपने स्वाभिमान को खूंटी पर रखकर तैयार हो गया। दोनों लड़के हरिराम को बांहों से पकड़े हुए थे। हरिराम झोली पसारे दलित मोहल्ले में अपनी अंधी आंखों में अश्रुजल लेकर वोट मांग रहा था। बीच बीच में दोनों लड़के जो भी दलित मिलता उसके पैर पकड़ लेते और तब तक नहीं छोड़ते जब तक वो उन्हें वोट का आश्वासन नहीं दे देता। पीछे-पीछे उसके समर्थक भी चल रहे थे। उनमें से कुछ लोग कहते जाते कि -" भाईयों तुम हमारे भाई ही हो, हमने तुम्हें कभी अलग नहीं समझा। आज यह अंधा आदमी झोली पसार बनाकर तुमसे भीख मांग रहा, इसे निराश मत करना। अंधे की मक्खी तो भगवान ही उड़ाता है।" आज हर दलित राजा बलि से कम दिखाई नहीं दे रहा था और हरिराम बामन अवतार की तरह साम दाम सभी आजमा रहा था।

कैसा अनोखा दृश्य था। ब्रिटिश सरकार से लेकर आज तक कितने ही कानून दलितों के लिये बने, मगर सारे ही नाकाम रहे थे। सवर्णों ने हर बार उन कानूनों की धज्जियां उड़ाई थीं। कभी भी दलितों से सीधे मुंह बात नहीं की, उन्हें अपने सामने कभी भी खाट पर बैठने नहीं दिया, हमेंशा उन्हें अछूत कहकर दुत्कारते रहे। आज वही सवर्ण झोली पसारे भिखारी की तरह उनके आगे मिमियां रहे थे। वाह रे लोकतन्त्र, जो काम बड़े बड़े कानून नहीं कर पाये आज वोट रूपी इस हथियार ने कर दिखाया।

सभी उम्मीदवार यहां आते, मिन्नते करते और यह दलित भी उन्हें झूठा ही सही परन्तु आश्वासन दे देते। रात में इस मोहल्ले में शराब का अम्बार लग जाता। कई लोगों ने तो साल भर का कोटा इन चुनावों में जमा कर लिया था। कई उम्मीदवारों ने तो गांव में कच्ची शराब की भट्टी ही शुरू करवा दी थी। चुनावों की जितनी खुशी शराबियों को होती है शायद उतनी जीतने वाले उम्मीदवार को भी नहीं होती होगी। कोई हारे या जीते इससे दूर दूर तक इनका कोई सरोकार नहीं होता, इन्हें सिर्फ सरोकार होता है शराब से। जब ये लोग रात को पीने के लिये इकट्ठा होते हैं तो चुनाव के बजाय सिर्फ यही बातें करते है कि अमुक उम्मीदवार ने आज अंग्रेजी पिलाई, फलां उम्मीदवार ने आज शराब के साथ गोश्त के भी पैसे दिए। पीते पीते कई बार यह लोग आपस में लड़ पड़ते हैं। फिर कोई कम पिया हुआ शराबी उन्हें समझाता है - " हमें किसी के जीतने या हारने से क्या मतलब, जो भी आये सबसे कुछ न कुछ ऐंठो। यही राजनीति है। हमारी तरफ से कोऊ नृप होई हमें का हानि।" सभी शराबी ऐसी बातें सुनकर वाह वाह कर उठते।

इन सबसे भिन्न शकुन्तला के पति हरिया की रणनीति सबसे अलग थी। उसने चारों गांवों में जमकर रुपये बांटे और ज़्यादातर मतदाताओं को अपने साथ मिलाने में कामयाब रहा। इस बार वो जीत के लिए आश्वस्त था। इसके अलावा दूसरा कारण यह भी था कि इस बार जयगढ़ से तीन उम्मीदवार खड़े थे और वो सुमेंरपुर से अकेला ही खड़ा था। साथ ही हरिया की ससुराल भी जयगढ़ में ही थी, इसका भी उसे फ़ायदा मिलना निश्चित था।

जयगढ़ के चरण सिंह में वो सारे गुण थे जो राजनीति में चाहिए। शेरपुर और सुमेंरपुर में अधिकांश लोगों से उसके प्रगाढ़ रिश्ते थे। एक तरह से चरणसिंह उन पर आंख मींच कर भरोसा करता था। पिछले कई चुनावों में चरण सिंह के कहने पर इन दोनों गांवों से वोट भी अच्छे मिले थे जिसकी बदौलत धन सिंह सरपंच के चुनाव में सफल रहे थे। चरन सिंह और धन सिंह दोनों गहरे दोस्त थे, या दूसरे शब्दो में कहें तो धन सिंह का मुख्य राजनैतिक सलाहकार चरण सिंह ही था। धन सिंह यदि चन्द्रगुप्त था तो चरण सिंह उसका चाणक्य था। शराब के दोनों शौकीन थे क्योंकि पिछले कई वर्षों से गांव की राजनीति में उनका दखल था सो शराब का शौक अनिवार्य-सा ही बन गया था। रोज़ चुनाव प्रचार के बाद जब धन सिंह के घर पर दिन भर के घटनाक्रम की परिचर्चा होती तो इसकी शुरूआत चरण सिंह ही करता।

" शेरपुर और सुमेंरपुर में तो किसी को अपनी तरफ से प्रचार करने की जरूरत ही नहीं है। सब मेरी मुट्ठी में हैं। वहां के 90 प्रतिशत वोट अपने हैं। वहां से तो हम जीते ही पड़े है।" कहते कहते हाथ में रखे जाम को खाली करने लगा। इतने में ही बीच में राजन्ती का पति रतन बोल पड़ा -"पर काका मुझे इस बार सुमेंरपुर में कुछ गड़बड़ लग रही है। हमारे इतने वोट नहीं है वहां।" इस बात को सुनकर चरन सिह तैश में आ गया और कहने लगा - "अरे वाह रे बावड़ी बूच, मेरे तो अंगुलियों पर रखे हैं सारे वोट, ले अभी गिनवाता हूं, कम से कम शेरपुर से 200, सुमेंरपुर से 300, जयगढ़ से 600 और नवलपुरा से 250 वोट तो आज की तारीख़ में हमारे हैं। इनमें तो किसी प्रकार का रोड़ा ही नहीं हैं। अब कुल मिलाकर 1350 वोट हमारे पास हैं जबकि हार जीत तो 1000 वोट पर ही हो लेगी। हमें जीतने की अब कोई चिंता नहीं है, हम तो जीते ही पड़े हैं पर सवाल इस बात का है कि नवलपुरा में थोड़ा और जोर लगाओ फिर देखो बाकी सारे उम्मीदवारों की जमानत जब्त हो जायेगी।" इस बात का समर्थन धन सिंह भी बड़े जोर से करता और फिर दोनों नया पैग बनाकर बात को आगे बढ़ाते।

इन चुनावों में एक ही गांव में लोग कई-कई धडों में बट जाते हैं। जो लोग दिन रात साथ-साथ बैठकर हुक्का पीते थे, आज वे एक दूसरे से नजरे चुराते फिर रहे हैं। भूलवश यदि वे आपस में बात भी करते हैं, तो केवल छल कपट और प्रपंच का मुखौटा पहने हुए ही बात करते हैं। जहां तक वोट देने की बात आती है, वो वहीं खड़े-खड़े ईमान धरम उठा जाते हैं और एक दूसरे को इस प्रकार आश्वस्त करते हैं मानो कृष्ण और सुदामा बातें कर रहे हों।

कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो एक उम्मीदवार के पास जाकर दूसरे उम्मीदवार की बेबाक बुराई करते हैं। सामने वाले को यह यकीन दिलाने में कोई कसर नहीं छोड़ते कि वही उसका सर्वेसर्वा है। लेकिन इन लोगों का असली मन्तव्य उसकी रणनीति को समझना होता है।

आख़िरकार चुनाव का वो दिन आ ही गया जिसका सब को बेसब्री से इंतजार था। लोग प्रात: 8 बजे से कतारो में लग गये। दिन के 12 बजे तक शकुन्तला के अलावा बाकी उम्मीदवारों के गांवों की कतारे समाप्त हो गई। शकुन्तला के गांव की पोलिंग शाम 5 बजे तक भारी भीड़ के साथ शुरू रही।

मतगणना का परिणाम रात बारह बजे घोषित किया गया। कौशल्या और मुनिया दोनों की जमानत जब्त हो गई थी। राजन्ती को 550 वोट मिले और वो दूसरे स्थान पर रही। आख़िरकार शकुन्तला की भारी बहुमत से जीत हुई। यह जीत एक तरह से धनबल की थी, लोकतन्त्र की सारी मर्यादाएं धनबल के सामने पराजित हो गई।

परिणाम जानते ही मुनिया की आंखों में अंगारे दहकने लगे। उसने कुन्जी पर आंख मूंदकर विश्वास किया था तथा कुन्जी ने जीत के प्रति उसे इतना आश्वस्त कर रखा था कि उसे अभी भी यकीन नहीं हो रहा था कि वो पराजित हो गई है। जैसे ही वह मतगणना कक्ष से बाहर निकली, सामने ही कुन्जी सिग़रेट के कश लगा रहा था और हारने वाले उम्मीदवारो की हंसी उड़ा रहा था। उसे देखकर मुनिया का खून खौल गया। मुनिया ने अपने पैर से चप्पल निकाली और सबके सामने कुन्जी मास्टर के ऊपर चप्पलों की बरसात शुरू कर दी। किसी को भी यह माज़रा समझ में नहीं आ रहा था। लोगों ने आकर बीच बचाव किया। बीच बचाव का फ़ायदा उठाकर कुन्जी जैसे ही वहां से भागा, तो मुनिया ने झपट्टा मारा और उसकी धोती का छोर उसके हाथों में आ गया। कुन्जी धोती को वहीं छोड़कर भीड़ का फ़ायदा उठाकर भाग गया। मुनिया की ड़बड़बाई आंखों से अविरल अश्रुधार बह रही थी। अभी भी उसके हाथ में चप्पल थी और उसकी अंगारे उगलती आंखें भीड़ में कुन्जी को ढूंढ़ रही थीं।

चुनाव तो कब का खत्म हो चुका था किन्तु मुनिया की आंखों में अभी भी बदहवासी और नफरत की चिंगारी सुलग रही थी।

विजय सिंह मीणा
निदेशक ( रा.भा. )
जल शक्ति मंत्रालय

# नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), गुरूग्राम की बैठक
## दिनांक 25-07-2022

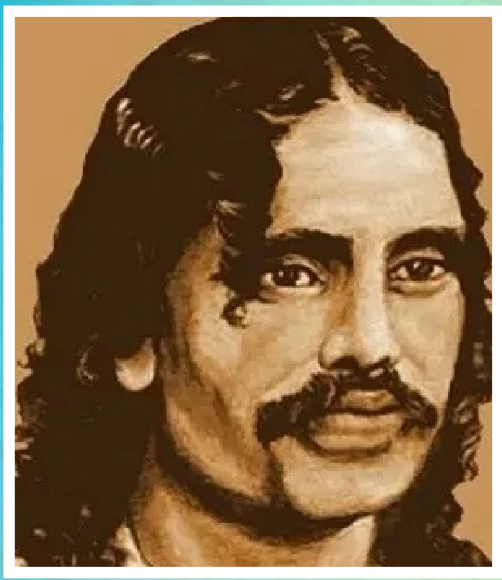

# भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

(9 सितम्बर, 1850 – 6 जनवरी, 1885)

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिनु निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।
अँग्रेजी पढ़ि के जदपि, सब गुन होत प्रवीन।
पै निज भाषा-ज्ञान बिन, रहत हीन के हीन।।

निज भाषा उन्नति बिना, कबहुँ न ह्वै है सोय।
लाख उपाय अनेक यों, भले करे किन कोय।।
इक भाषा इक जीव इक, मति सब घर के लोग।
तबै बनत है सबन सों, मिटत मूढ़ता सोग।।

और एक अति लाभ यह, या में प्रगट लखात।
निज भाषा में कीजिए, जो विद्या की बात।।
तेहि सुनि पावै लाभ सब, बात सुनै जो कोय।
यह गुन भाषा और महं, कबहूं नाहीं होय।।

भारत में सब भिन्न अति, ताहीं सों उत्पात।
विविध देस मतहू विविध, भाषा विविध लखात।।
सब मिल तासों छाँड़ि कै, दूजे और उपाय।
उन्नति भाषा की करहु, अहो भ्रातगन आय।।


आईएसओ 9001:2015

वाप्कोस लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
जल शक्ति मंत्रालय
(A Government of India Undertaking)
Ministry of Jal Shakti

पंजीकृत कार्यालय : 5वां तल, ''कैलाश'', 26, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली - 110 001
दूरभाष: +91-11-23313131, 23313881, फैक्स: +91-11-23313134, 23314924, ई-मेल: ho@wapcos.co.in

निगमित कार्यालय: 76-सी, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर-18, गुरूग्राम-122015, हरियाणा
दूरभाष: +91-124-2399428, फैक्स: +91-124-2397392, ई-मेल: mail@wapcos.co.in
ई-मेल: hindi@wapcos.co.in, वेबसाइट : http://www.wapcos.co.in